



بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

કામ વો લે લીજિયે તુમકો જો રાઝી કરે
ઠીક હો નામે 'રઝા' તુમ પે કરોળો દુરુદ

હર પરેશાની કા ઈલાજ

:: અઝ ::

અતાએ હુઝૂર મુફતીએ આ'ઝમે હિંદ હાફિઝ વ ફારી હઝરત અલ્લામા

મૌલાના મુહમ્મદશાકિર નૂરી રઝવી

(અમીરે સુન્ની દા'વતે ઈસ્લામી-મુંબઈ)

સુન્ની દા'વતે ઈસ્લામી (દયાદરા શાખા)

C/o. ફયૂઝાને રઝા મંઝિલ, મુ.પો. દયાદરા,

તાલુકા & જિલ્લા : ભરૂચ પિન. ૩૯૨૦૨૦,

મો. ૯૪૨૭૪૬૪૪૧૧, ૯૬૬૪૫ ૨૧૪૭૭

Email : anjuman2006@hotmail.com www.barkatekhwaja.net

પ્રકાશન નં. ૨૬૯ આવૃત્તિ-૧ પ્રત : ૩૦૦૦

૦૧-૨૫. આખર હિ.સ. ૧૪૪૪ ઓક્ટોબર-૨૦૨૨

હદીયો રૂ. ૫૦/-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सर्व हक़ प्रकाशकने स्वाधिन

किताबनुं नाम : हर परेशानी का इलाज

अर : मौलाना मुहम्मदशाकिर नूरी रज़वी
(अमीरे सुन्नी दा'वते इस्लामी-मुंभई)

गुजराती लिपियांतर: जनाब दाउदभाई आदम मंघारवी

पेजुस : ४८

कंपोडिंग : सादिक याकूब पटेल हयादरवी
मुजम्मिल इल्यास पटेल-ईभर

आवृत्ति : प्रथम नकल : ३०००

प्रकाशन वर्ष : १, रबीउल आभर, खि.स. १४४४
अंग्रेज ता. २८ ओक्टोबर-२०२२, जुम्आ

प्रकाशक : सुन्नी दा'वते इस्लामी-दयादरा शाखा
मु.पो. दयादरा, तालुका & जिल्ला : भरुच,
पिन : ३०२०२०, मो. ९४२७४ ५४४११

बैंक ओफ़ बरोडा

A/c. No. 34620100000303

Razvi Kitab Ghar, IFSC Code : BARBODAYADR

पांचमो अंक डिरो छे.

Googlepay / Phonepay / Paytm Mo. 9427464411

WhatsApp No.

Mo.9664521477


BAYAANAT Youtube Link

(1) <https://youtu.be/VrVbCEtmXAY> (2) <https://youtu.be/yNXr6DTcBCY>

अनुक्रमिका

* ✍️ बहुत अहम दो बातें...	05
(तकरीर : १)	
* 📁 गुनाह छोड़नेका इनाम	09
* 🏠 दुरुद शरीफ़ की इज्जत	10
* ⚖️ इजतेमामें जानेसे पहले क्या नियत करें ?	10
* 📊 स्ट्रेस, टे-शन का रीजन क्या है ?!	11
* 📊 गुनाह ई-सानको कमजोर करता है	12
* 📊 सबसे बड़ा इबाहतगुजार कौन ?	13
* 📊 सुकून के बारेमें झड़के आ'लम رضى الله عنه का जवाब	14
* 📊 गुनाह पर जिद पकणनेवालोंका अंजाम !	15
* 📊 नेकीमें सुकून है, गुनाह बेचैन करता है	16
* 📊 जो गुनाह कमाते हैं ! उनकी सजा पाएंगे !	17
* 📊 क्या गुनाह करते हूँ रब हमें देभता है ?!	18
* 📊 हमारा यैन, वफ़ार सबकुछ क्यूं यला जाता है ?	19
* 📊 शर्म नबी, भौंके भुदा, यल भी नहीं वो भी नहीं !	20
* 📊 गुनाहमें लज़्जत है, इज़्जत नहीं !	21
* 📊 आराम और सुकून में इर्क है !	21
* 📊 तलज्जुदसे भी बेडतर क्या है ?!	22
* 📊 इस्तिग़फ़ार की भरकतें	23
* 📊 हम गुनेहगारोंकी समज़के लिये ऐक इब्रतनाक वाङ्गिआ	24
* 📊 रबसे ज़यादा कोई महरबान नहीं !	26

(तकरीर : २)

- *  हर मुसीबत का इलाज : अल्लाह का जिक्र ! 27
- * हमें जो भलाई पहुंचे वो अल्लाह की तरफसे है 28
- * काम दुन्या देवती है और नियत भुदा देवता है 29
- * यह अल्लाहका इज़्जल है और उसके रसूल का ओहसान है ! 30
- * यह बुज़ुर्गों की दुआओं का कैज़ान है ! 31
- * सबसे सीधा रास्ता दिखानेवाली किताब : कुर्आन ! 31
- * क्या प्रोब्लेम्स का सोल्युशन अल्लाह के जिक्रमें है ?! 32
- * अक़लवाला कौन ? 33
- * उज़रत सुलैमान عليه الصلوٰة والسلام के शागिर्द का क़माल ! 34
- * अल्लाह को क़षरतसे याद करना : कामयाबी का राज ! 35
- * रोज़ी में भरकत याहते डो ? अल्लाह को मत भूलना ! 37
- * अल्लाह को क़हां क़हां डम भूल रहे हैं ?! 38
- * अल्लाह का जिक्र मुनाफ़िक् को त्भारी लगता है ! 38
- * अल्लाह के जिक्र के बग़ैर कोई ता'लीम डसिल न करो 39
- * ८८ भीमारियों का इलाज : ला डौल... 40
- * डमारा 'सुड्डानल्लाह' पण्डना अल्लाह डडोत पसंद है ! 41
- * अल्लाह से ज़भान क्युं मांगनी याडिये ? 41
- * डणा भुशनसीब डंढा कौन ? 42
- * मुसीबतों से नज़ात का सामान क्या है ?! 43
- * उज़रत परेशानियोंमें त्भी जिक्रुल्लाह से गाफ़िल न डनो ! 44
- * अल्लाह का जिक्र क़िसे, क़िसे क़डते हैं ?! 44
- * रसूलुल्लाह ﷺ की पयरवी क़िस के डिये डिक्रिकल्ट है ? 45
- * कुर्आनसे मेंने नअत गोई सीपी : आ'ला उज़रत رحمه الله عليه 46

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ
الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُورَ اللَّهِ
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْكَ وَسَلَّمَ

बहुत अहम दो बातें...

उत्तरत क़िबला अमीरे सुन्नी दा'वते इस्लामी मौलाना मुहम्मदशाकिर नूरी रजवी مدظلہ العالی के बयानात सुनकर कितने राह भटके डूबे इमान और अमल की इस्लाह करके राहें रास्त पर आ गये हैं, आते हैं और आते रहेंगे, ई-शा अल्लाह ! आपके डायॉमें ये जो किताब "हर परेशानी का इलाज" है यह भी U.K. के सुन्नी दा'वते इस्लामी के 25वें सालाना इजतेमा (२०२२) के दो रोज (2nd & 3rd) के दो बयानोंका मजमूआ है. यह बयानात नहीं हैं बल्के बिगणी दूध जिंदगी को और हमारी आपेरतको कामयाब करनेकी इहानी ट्रीटमेन्ट है ! हम यह समजते हैं के जिसके सीनेमें हिल नामकी कोई चीजमें अगर थोड़ी सी भी इह बाकी है तो बहुत जल्द यह बनायात सुनकर या पण्डकर वो गुमराहीवाली और गुनाहोंवाली जिंदगी छोणकर रबकी बारगाहमें तौबा करके सीधी राह पर, नेकी की राह पर आ जायेगा.* जरूर उसका हिल पिघलेगा और वो रो रो कर अपने गुनाहों की रबसे माफी मांगकर नेकीवाली, हिली सुकूनवाली जिंदगी अपना लेगा और उम्मीद है के मुर्दा हिल भी जिंदा हो जायेंगे ! ई-शा अल्लाह !

ईन दोनों बयानातमें कुर्आन की कई आयतों के जरिया लरपुर इस्लाह का सामान मौजूद है. उत्तरत क़िबला अमीरे सुन्नी दा'वते

* (लिंक : (1) <https://youtu.be/VrVbCEtmXAY> (2) <https://youtu.be/yNXr6DTcBCY>)

• हर परेशानी का इलाज •

ईस्लामीने दोनो बयानातमें आयतोंकी भरमार लगा दी है, और उदीषे भी बयान की है. आज भास करके बडोत सारे लोग जडनी परेशानियां, ईकोनोमिकल परेशानियां और दुसरी तरड तरड की परेशानियों में और स्ट्रेसमें, डिप्रेशनमें, टेन्शन में मुडतला नजर आते हैं. फिर उसे दूर करनेके लिये शरीअतके खिलाफकी गलत सलत राहें ईप्तियार करते हैं, और फिर और जयादा मुसीबतोंमें ईंसते जाते हैं. लेकिन ईस बयानातमें साफ लइजोंमें बता दिया के हमारी हर परेशानी की वजह हमारे गुनाह, हमारे करतूत हैं. डालां के रब तआला नेकोंको आजमाने के लिये भी उन पर मसाईब भेजता है, लेकिन जयादातर बात यही है के डम गुनाहों भरी जिंदगी जते हैं ईस लिये डम परेशान हैं. और उसे कुआन की तकुरीअन ६०-६५ आयतों से षाभित किया है. और इसका इलाज बताया है के अल्लाह के जिक्से जलाअें मुसीबतें कैसे दूर होती हैं वह भी कुआनकी आयतोंसे जणे आसान अंदाजमें, हिलमें उतरनेवाले अंदाजमें षाभित किया है.

जणे अइसोस की बात है के वो कुआन जे हमारी हिदायत के लिये उतरा है उसे अकधर लोग ! दिनमें अेकजार भी पणहने या समजनेकी कोशिश नहीं करते, जल्के महीनोंमें शायद कभी सिर्फ तिलापत कर लें यह तो बहुत हो गया ! और समजने के लिये कुआन पकणनेवाला तो ईक्का दुक्का कोष हो तो ! और कइ ऐसे हैं के साल भर में अेकजार भी उसे नहीं पणहते, रमजानमें भी नहीं ! (अल्लाहकी पनाह !) यह जन्नतमें जानेके दावेदारोंका हाल है !

न कुआन पणहते हैं, न दुसरी किताबें पणहते हैं, न उलमा व मुअल्लिगीनकी सोडभत पसंढ है, अस यूं ही आवारगीमें जिंदगी असर हो रही है और फिर आस्मानसे झूल भरसनेकी डम उम्मीदें रभते हैं ! जरा सोचो ! यह कैसे मुम्किन डोगा ?! हर बातमें हिमाग लणाते हैं तो यह दुन्या व आप्नेरतकी भलाईकी बातमें भी हिमाग लणाओ ! लेकिन नहीं लणाते ! यह भेवकूझी नहीं है ?! डमारे जवनका बंधारन कुआनमें

है, दुनिया व आभेरतमें नज़ात का गाँठ-सँघोष है, उसे उम छोण
बैठे हैं तो हमारा तला कैसे हो सकता है ?!

कुछ लोगों को गुनाहसे बचनेका कहते हैं, तो कहते हैं के उम नेक
काम भी करते हैं न ! जैसा के कुछ सालों पहले एक शाहीमें बे-सबाजा,
जानस पार्टीमें ११-१२ लाख रुपिये एक आदमीने भर्य कर जाले तो
कहा गया के यह पैसे उराम कामों में भर्य न करें तो कितना बेउतर
होता, तो कहा के उम मस्जिदें भी नेक काम के लिये बनवाते हैं ! तो
ईतना गुनाह करेंगे तो क्या हो जायेगा यार ! या'नी नेकियां भी करते हैं
और गुनाह भी करते हैं ! तो ऐसे लोगोंको भी बहुत अच्छी समझ ईस
किताबमें दी गई है.

हमारी आजिजाना गुज़ारिश है के ईस किताबको ज़रूर पण्डें, अपने
दोस्तोंकी मेडकिल में, घरवालोंके साथ बँठकर पण्डें, पण्डकर सुनाओं या
उज़रत अभीरे सुन्नी दा'वते ईस्लामी के यह दो बयानात ज़ाउन लोड
करके सुन लें, जैसे हो सके सुनें, पण्डें, ई-शा अल्लाह ! हिल आभिर
हिल है ! वो ज़रूर पिघलेगा और उम और आप सीधी राहके मुसाफ़िर
बन जायेंगे और ईसीमें हमारी दुनिया व आभेरतकी तलाई है.

अल्लाहके प्यारे उबीन عليه السلام के सहके से नेक राह चलनेकी, मुसीबतों
दूर होने की दुआओं किशिये ज़रूर हमारा बेणा पार हो जायेगा, ई-शा
अल्लाह ! क्यूं के :

सखी बात सिभाते यह है - सीधी राह दिभाते यह है
दूबी नाव तिराते यह है - छिलती नीवें जमाते यह है
तूटी आसों बंधाते यह है - छूटी नज़्जें यलाते यह है
जलती जनों बुजाते यह है - रोटी आभें उंसाते यह है

-(आ'ला उज़रत)

-लि. पटेल शब्दीर अली रज़वी दयादरवी

(१-२बी.आभर, डि.स. १४४४, अं. ता. २८-१०-२०२२, ज़ुम्मा)

अपनी रहमत के शहा मुझको हवाले रचना

उम गुनेउगारोंको सरकार संभाले रचना
कुभ्रमें आपके जत्वों के उजाले रचना

अपनी थोपट पे जो बिठाया है तुमने मुझको
अपनी रहमत के शहा मुझको हवाले रचना

यूं तो तयबुड में बुलाते ही हो अक्षर लेकिन
अब के अंदाजे सभा आप निराले रचना

आ ज हु-या के गभोंसे तो निकाला है उमें
कल क़यामत में ईसी तरहा निकाले रचना

सरवरा ! वड़शते गम और तपीशे मउशरमें
उम गुनेउगारों पे रहमत के होशाले रचना

अर्ज है रहमते आलम के लभे "शाकिर" पर
शिक़वअे रंजो अलम और न नाले रचना



गुनाह छोडनेका इनाम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْاَنْبِیاءِ وَ
الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِهِ وَاصْحَابِهِ الطَّیِّبِیْنَ الطَّاهِرِیْنَ-

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ- بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

وَإِذَا قِیْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ
وَلِیْسَ الْبِهَادُ ۝ صَدَقَ اللّٰهُ الْعَظِیْمَ-

(सूरअे अक़रउ, २/२०६)

इाबिले सह तकरीम हुजूर सैयद अल्लामउ ताजुल उल्मा नूरानी मियां साउअ इफ़ला मङ्गले العالی हीगर सादाते किराम, उलमाअे जवील अउतेराम, डाजरीनो नाजरीने सुन्नी इजतेमा अस्सलामु अलैकुम व रउमतुल्लाहि व अरकातुहु.

जिस आयअे करीमा की तिलावत का मैंने शई डासिल किया उस से मुताल्लिक कुछ मा'रुजात पेश करने से पहले आइअे करीम रउफ़ो रहीम की आरगाहे अेकस पनाउमें जिस तरीके से मैं पण्डाउं अक़ीदतो मइअतमें दूअकर उसी तरीके से हुइदो सलाम का नजराना पेश करें :

الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَصْلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا حَبِیْبَ اللّٰهِ

اَصْلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا نُوْرَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْكَ وَاٰلِكَ وَسَلَّمَ

क्या निश्चित करनी चाहिए वो निश्चित नहीं करते. उत्तरत कुतैल बिन अयाज عليه السلام ने अपनी वालिदा से उस दौर के बने भतीब के भिताब को सुनने के लिये जाने की इजाजत याही और अपनी वालिदा से अर्ज किया, मां ! वो भतीब तशरीफ लाये हैं आप इजाजत दो तो मैं उनके वाअज की मेडकिल में डाजिर हो जाऊँ. मां ने कहा, बिल्कुल जाओ बेटे ! लेकिन जाने से पहले अक निश्चित कर लो. उन्होंने कहा, क्या निश्चित करुं ? तो मां ने इशाह इर्माया, अयाज ! यह निश्चित करो के जो सुनुंगा उस पर अमल करुंगा ! तो जब ये निश्चित कर के बंदा मेडकिल में जाता है ना ! तो फिर उस की जिंदगी में तबदीलियां भी पैदा होती हैं और फिर वो अपनी जिंदगी को संवारने की कोशिश भी करता है.

★ स्ट्रेस, टेन्शन का रीजन क्या है ?! ★

अब आइये मैं ने जिस आयये करीमा की तिलावत का सई हासिल किया उसकी रोशनी के अंदर ग्लोबल प्रोब्लम का सोल्युशन और भास तौर पर युथ के प्रोब्लम का सोल्युशन मैं आप के सामने पेश करने की सआहत हासिल करुं. इस वक़्त अक सभसे बणा मसअला टिनेजर्स से लेकर वालीस पयास की उम्र तक के लोगों के अंदर बल्के अगर ये कहुं तो गलत न होगा के छोटे बच्चे भी इसका शिकार हैं ! मुझे अक छोटेसे बच्चे के बारे में पता यला जिस की उम्र मुश्किल से नव साल की होगी उसके बापने कहा, मेरा बच्चा डिप्रेशन का शिकार हो गया ! तो ये ग्लोबल प्रोब्लम है स्ट्रेस, टेन्शन, डिप्रेशन. अगर आप सोसायटी का नहीं, अपने घर का जाईजा लें तो आप के घर के अंदर भी कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जो उदास नजर आयेंगे, गमगीन नजर आयेंगे, टेन्शनमें नजर आयेंगे, स्ट्रेस में नजर आयेंगे. किसी सायकोलोजिस्ट के पास जायें तो वो लइजों के जरीये आप के टेन्शन के सोल्युशन की कोशिश करेगा. साईकेट्रीस्ट के पास जायें मेडिसीन के जरिये आप के टेन्शन को दूर करने की कोशिश करेगा. लेकिन ! कभी हमने सोचा के टेन्शन इस वक़्त पूरी दुन्यामें बण्ड कयूं रहा है ? स्ट्रेस का रीजन क्या है, टेन्शन का सभब क्या है ? तो बहोत सारे लोग यह कहते हूये दिभाई होंगे

जना टेन्शन है. गुनाह की वजह से ई-सान कमजोर हो जाता है. मेरा ये जुम्ला कहीं नोट कर सकते हैं तो नोट कर लीजिएगा, जिंदगीभर ये जुम्ला काम आयेगा. गुनाह ई-सान को कमजोर करता है और नेकी ई-सान को ताकतवर बनाती है.

गुनाहने बेचैन कर दिया, ईस लीअे के गुनाह जब ई-सान करता है तो दिल पर अेक सियाह नुक्ता कर दिया जाता है, गुनाह छाथसे कर रहे है नुक्ता दिल पर ! गुनाह आंभ से कर रहे हैं, नुक्ता दिल पर ! गुनाह पेर से कर रहे हैं, नुक्ता दिल पर ! गुनाह जभां से कर रहे हैं, नुक्ता दिल पर ! और उदास दिल ही हो रहा है ! ये दिल अगर परेशान होता है तो आदमी समज जाता है. किसी भी ई-सान के येउरे को भुश और भुर्रम टेभकर आप समज जाऐंगे ये बडोत भुश है, बडोत मूड में है, और उतरे हुअे येउरे को टेभकर आप समज जाऐंगे ये बडोत उदास लग रहा है. ईस का दिल बेठा हुवा है. पूरी दुन्यामें बेठा जा रहा है, वजह ? गुनाह !

★ सभसे जना ईबाहतगुजार कौन ? ★

हम समजते हैं के नमाज, रोजा, उज्जो जकात के जरिअे अल्लाह के बडोत बणे ईबाहतगुजार बंटे बन जाऐंगे. लेकिन ! जब उदीष का मुतालिया करते हैं तो अकल हंग रह जाती है. आइअे करीम ﷺ इर्माते है : **أَتَى الْحَارِمَ تَكُنُّ أَعْبَدَ النَّاسِ** "हराम चीजों से बचो ! लोगों में सभसे जना ईबाहतगुजार बंटे बन जाओगे." (शोअभुल ईमान, ७/७८, मुन्सहे अभी यअूला, ११/११३, मुस्नहे अल ईमाम अहमद, २/३१०) गुनाह से बयोगे तो अल्लाह के ईबाहतगुजार बंटे में बन जाओगे और ईबाहतगुजार बंटे होकर अगर गुनाह करोगे तो तुम्हारे दिल को इरार की दौलत नसीब नहीं हो सकती. आज सिन्धुअेशन क्या है ?! युथ भास तौर पर समजें. हमारे वो उजरात भी जो इयनान्सियल स्ट्रोंग हैं, वो भी थोणा सा समजें, और हमारे जो उईइ उजरात हैं वो भी थोणा सा समजें. ईल्म न होने की वजह से बडोत सारे गुनाह की तरफ वो बण्ड जाते

हैं. बैठे हैं गीबत शुरू हो गई, बैठे हैं कबकी का भेल शुरू हो गया, एस की टांग घसीटते हैं उसकी टांग घसीटते हैं. और अगर उनसे कडा जाओ के ऐसा न करो ! तो छोणते नहीं है, जिसने रोका और जिसने टोका दूसरी जगह जाकर उसकी ली भुराई शुरू कर देते हैं, ये ली बणी अजब बात है ! पूरी दुन्यामें गुनाह कैल रडा है और गुनाह को कैलाया जा रडा है और ईसी गुनाह के कैलाव ने और ईसी गुनाह के मुर्तकिब होने की वजहसे आज बेयेनी बणल रडी है.

★ सुकून के बारेमें झड़के आ'उम رضي الله عنه का जवाब ★

आप देभिअे सैयदना झड़के आ'उम رضي الله عنه जिन के पास सिक्युरिटी गार्ड नहीं थे, बोडीगार्ड नहीं थे, लेकिन ! अल्लाहु अकबर ! दररफ्त के नीये रेत के उपर यादर बिछाकर सो रहे हैं. फीरेन मिनिस्टर मिलने के लीअे आता है. पूछता है, अमीरुल मो'मिनीन कहां हैं ? तो मदीने में किसीने बताया, बकरियां यरा रहे होंगे. जब वहां पहुंचा तो बकरी यरानेवाला तो नजर आया. उससे पूछा, अमीरुल मो'मिनीन कहां हैं ? बताया के दररफ्त के नीये सो रहे हैं. देभो वो जो सो रहे हैं वडी अमीरुल मो'मिनीन हैं. वो हैरत में पण गया के जिन के नाम से दुन्या कांपती है, जिन के नाम से ईवाने बातिल में जलजला हो जाता है वो आराम से दररफ्त के नीये बगैर बोडीगार्ड के सो रडा है ! जो के कुरीबसे येडरे को देभता है तो कांपना शुरू करता है. झड़के आ'उम رضي الله عنه की आभ भुली तो देभा कोई बाडरी आदमी है. पूछा, कहां से आये हो ? इलां जगा से आया हूं. मुझे देभने के लीअे ल्मेजा गया के आपने कोई लावो लश्कर तैयार कर रफ्पा है, क्या वजह है के जहां आप जाते है आप को इतड मिल जाती है तो मैं ये देभने आया के आप ही अमीरुल मो'मिनीन हैं ?! झड़के आ'उमने इर्माया, हां ! अब सुनिये टेन्शन ! उसने अर्ज किया के उमारे बादशाहों को नरम गदों पर सिक्युरिटी गार्ड के दरमियान सुकून की नींद नहीं आती और अय उमर ! क्या बात है ? दररफ्त के नीये यादर बिछाकर तुम आराम से

सो रहें हो ?! तुम्हें सुकून की नींद कैसे आ रही है ? झड़के आ'जम उठकर भेठ गये और ईशाद इर्माया, सुन ! जे लोगो पर हुकूमत करता है उसे नरम गदो पर नींद नहीं आती और जे लोगो की भिदमत करता है उसे यटाई पर भी नींद आ जया करती है.

★ गुनाह पर जिद पकणनेवालोका अंजम ! ★

सुकून ! जुल्म करने से सुकून नहीं मिलता, जयादती करने से सुकून नहीं मिलता. आज अगर हमारी नींदे भराब हो यूकी हें और येन की नींद नहीं आती. हीक है, हमने किसी पर जुल्म नहीं किया, भुद पर तो जुल्म कर रहे हें ! अपनी जान पर तो जुल्म कर रहे हें ! हाथ गुनाह कर रहे हें, जभां गुनाह कर रही है, आंभ गुनाह कर रही है, हिमाग गुनाह कर रहा है, हिल गुनाहो से आलूदा है, और अगर कडा जामे के गुनाह से भयो ! तो अकण जाते हें ! देभिअे, कुर्आनने उसे मे-शन किया : $وَإِذْ قِيلَ لَهُ تَوَّابًا$, जब उनसे कडा गया, "अल्लाह से डरो !" $أَكْفُرُوا بِالْعَزَّةِ لِلَّهِ$ "तो गुनाह पर उन्डोने मज्द जिद पकण ली." यअनी और जरी हो गये, अब गुनाह नहीं छोणेंगे ! अब ऐसा शप्स जिस को अल्लाह से डरने के बारे में कडा जामे के छोण हो गुनाह ! मत करो ! अल्लाह से डरो ! और वो जिदी बनकर के कडे, मौलाना लोगो का काम ही यही है ! यह नहीं बोलेगे तो उन्की रोञ्च रोटी कडां से यलेगी ?! अगर उसकी मेन्टालिटी यह बन गई. और मैंने देभा है !

आप को मुंभई का अेक वाक्फ़िआ बताई. कोलाभामें अेक नौजवान रहता था. झईनान्सियल काई स्ट्रोंग था. रमजानमें हमारे ईलाके के अंदर मैंने उसको दो पोडर वक़्त याय पीते देभा था. तो मैंने उससे कडा, यार ! तुम क्या कर रहे हो ?! तुम कमसे कम माडे रमजान का अेहतेराम तो करो ! गेर मुस्लिम भी माडे रमजान का अेहतेराम करते हें. तो उसने जवाब में मुज से क्या कडा मालूम है ? उसने कडा, उस जमाने में मुजे शाकिरभाई ! शाकिरभाई लोग कडते थे. तो उसने कडा, "शाकिरभाई ! जिस के पास

मआजद्लाह ! जाने का न हो वो रोजा रभे ! मेरे पास तो बडोत कुछ पड
 हुवा है !" आज भी बडोत सारे सरमायेदार आप को ऐसे मिलेंगे जिनको
 शाही की तफारिब के अंदर डा-स और म्यूजिक से रोका जाये तो कडते हैं,
 पैसा डमने कमाया, डम याहें वैसा पैसा भर्य करें, आप कोन डोते हैं
 बोलनेवाले ?! ऐसे लोग जिनको अद्लाह से डरने के लीअे कडा जाये फिर
 भी वो गुनाह और जिह पकण लें, तो अब अंजाम कुर्आन क्या बताता है :
 فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ "उनके लीअे जहन्नम काही है." और फिर इर्मा दिया के,
 "कितना डी बुरा बिछोना है !" كَيْتَسُّ الْبُيُوتِ; आप क्या समजते हैं,
 बिछोना तो आप के घर पर भी है ना ! आप भी सोते हैं तो गद्दा अर्यथा
 डोता है, फिर उसके बाह कस्केटर आप लेते है, फिर तकिया लेते हैं, ये सारी
 चीजें सब के अंदर कोटन या डनलोप वगैरे जो भी कुछ है स्पोंज वगैरा
 उसका बडोत बेडतरीन. इस लीअे अर्यथा नींद के लीअे जर्री के आप
 जिस तरीके के बिस्तर पर सोने के आदी हैं उसी तरीके का आप को बिस्तर
 मिल जाये तो सुकून की नींद आयेगी. लेकिन कडा गया, "उसके लीअे
 जहन्नम काही है और क्या डी बुरा बिछोना है !" बिछोने का लइज आया
 الْبُيُوتِ "मिडाह" का लइज आया, तो वहां الْبُيُوتِ "मिडाह" बिछोना कैसे
 डोगा ? सोने की जो जगड डोगी वो भी आग की डोगी, ओंने की जो यादर
 डोगी वो भी आग की डोगी, तकिया भी जो डोगा वो आग का डोगा, सारी
 चीजें आग की ! अगर आप सोयेंगे के ये तो बडोत बाह की बात है, हुन्या
 में डी हेभ लो ! जिहगी जहन्नम बन यूकी है, स्ट्रेस में आहमी जल रडा है,
 अंदर से तणप रडा है, अंदर से बिलक रडा है, जिहगी का सारा सुकून
 उसका भत्म डो गया. तुम कड रडे डो, जडालत की वजड से, घर के प्रोब्लेम
 की वजड से, मैं कड रडा हूं, सिर्फ और सिर्फ गुनाह ! गुनाह ! और
 गुनाह की वजह से !

★ नेकीमें सुकून है, गुनाह भैयैन करता है ★

अकजाम्पल के तौर पर मैं आप को बताऊं. ऐसी मस्जिद जो याडे

गुजरात की छो याछे किसी और इलाके के देहात की छो. जो बिल्कुल छप्पर की बन छूई छो, पतरे की बनी छूई छो, पतरे का शेड लगा हुवा छो और पंभा लगा हुवा छो. राजस्थान के अंदर वो मस्जिद छो, ४४° डिग्री वहां पर टेम्परेचर छो. आप को जोहर की नमाज के वक़्त पर नमाज पण्डने जाना छे. मस्जिद में इने ली छे या नही, नही मालूम ! आप चले गये. आपने मस्जिद में नमाज अदा की, बगैर पंभे के ४४° टेम्परेचर छोने के भावजूद ! छप्पर की मस्जिद ! पतरे की मस्जिद, पतरे का शेड लगा हुवा छे और आपने उसके नीचे जो छे नमाज आपने अदा की. लेकिन जब नमाज के लीअे आप जाअेंगे तो येहरा थोणा उतरा हुवा ज़रूर छोगा लेकिन उस मस्जिद में नमाज पण्ड कर के जब आप निकलेंगे तो आप के येहरे पर नूर नज़र आ रहा छोगा. नधींग ! अेरकंडीशन ! टेम्परेचर इतना जयादा लेकिन यही बंदा तीन घंटे तक अेरकंडीशन में थिअेटर में बैठकर याय पीते छूअे पिकचर देभने के लीअे जाअे तो जाने से पेडले येहरा थोणा चमकता तो छोगा, लेकिन जब पिकचर देभकर पलटेगा तो येहरा सियड नज़र आयेगा ! तभीयत बेयेन छो जाअेगी, तभीयत बेकरार छो जाअेगी. **गुनाह बेयेन करता छे. गुनाह बेकरार कर देता छे.** उसको दुसरे अंगल से उदीष की रोशनी में समजाई. आड़ा अे करीम صلي الله عليه وسلم ईशाद इर्माते छें, शैतान दिल्ों में वसवसे पैदा करता छे, भात दिल् की छे. दिल् में वसवसे पैदा करता छे. और जहां किसी बंढेने कडा, अल्लाड ! भाग जाता छे शैतान ! और अल्लाड करार की दौलत अता इर्मा देता छे. आप जरा सोचो ! अंदाजा लगाओ ! छूपकर गुनाड या जाछिरी गुनाड. कुर्आनने फिर अेक जगड इर्माया, **وَرُدُّوْا كَافِرِيْهِ الْاِثْمَ وَالْبَاطِلَ** "भुले गुनाड ली छोण दो. छूपे गुनाड ली छोण दो." (सूरअे अ-आम, ५/१२०) किल्यरली (साइ साइ) कुर्आन कडता छे **وَرُدُّوْا** छोण दो !

★ जो गुनाह कमाते छें ! उनकी सजा पाअेंगे ! ★

यहां पर मुइस्सिरिन के कई अक़वाल छें. भुले गुनाड कौन से और

छुपे गुनाह कौनसे ? तो ईमाम मुजाहिदने इर्माया के भुले गुनाह से मुराह आ'जाअे जिस्मानी जो जाहिरी हें उनसे गुनाह. हाथों से गुनाह कर रहे हो छोण हो, जबां से गुनाह कर रहे हो छोण हो, आंभोंसे गुनाह कर रहे हो छोण हो, हाथ पैर से गुनाह कर रहे हो छोण हो. यह जितने भी जाहिरी आ'जा से तुम्हारे गुनाह हो रहे हें छोण हो ईसे ! **إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْرُونَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ** से मुराह ईमाम मुजाहिद यह इर्माते हें : दिल से भी जो गुनाह कर रहे हो उसे उसको भी छोण हो. और अगर नहीं छोणते तो कुर्आनने यार्ज लगा दिया. **إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْرُونَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ** कमाते है अनक़रीब अपनी कमाई की सज़ा पाअेंगे." (सूरअे अ-आम, ६/१२०) भेशक ! जो कमाई उन्होंने की, आप अंदाज़ा लगाईअे, उसकी सज़ा उन्हे मिलेगी और **سَيُجْرُونَ** जो लइज़ आया है यह बडोत क़रीब के लीअे आता है. लेकिन सीन (س) और क़रीब के लीअे. उससे मुराह हु-न्यामें भी और आप्पेरतमें भी ईस काम की सज़ा तुम्हें मिलेगी, बहला तुम्हें मिलेगा.

★ क्या गुनाह करते हूअे रज हमें देभता है ?! ★

अय रसूले आ'जम **ﷺ** के प्यारे दीवानो ! हम लोग सोचें क्या गुनाह करते वक़त छियकियाते हें ? क्या गुनाह करते वक़त अल्लाह से डरते हें ? ईतनी बेभाकी बण्ड यूकी हें के कुर्आन ने ईसको मे-शन किया : **بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ** के सामने बढी करे." (अल् कियामइ, ७५/५) बल्के ई-सान ईराहा करता है उसके सामने गुनाह करने का, वह देभ रहा है, मा'बूदे भरडक़ देभ रहा है, पालनडारे डक़ीक़ी देभ रहा है और वो देभ रहा है क़िर भी ई-सान गुनाह कर रहा है ! कितना दिलेर हो गया ई-सान ?! कितना बेभाक हो गया ई-सान और कितना भौंके भुदा से भाली हो गया ई-सान ! आज हम गुनाह करते नहीं ज़िज़कते और अल्लाहवालों का डाल यह के गुनाह के तसव्वुर से, गुनाह याह आने का भयाल भी आ जाता के गुनाह हमसे हुआ था उस तसव्वुर से भी लरज जाया करते थे, और गुनाह के भयाल से भी

लरज जाया करते थे.

अेक सडाभी मेरे आडा ﷺ की बारगाडमें डाजिर आये. डुषी सडाभी थे. अरु करते हैं, या रसूलद्लाड ! ﷺ मुजसे डडुत सारे गुनाड सरजद डो यूके हैं, मैं अगर तौबा करुं तो क्या मेरा डौला मेरी तौबा कुडूल इर्माअेगा ? आडाअे करीम ﷺ ने इर्माया, डं ! अद्लाड तुडुडारी तौबा कुडूल इर्मानेवाला है. अब उसके डाद का सवाल सुनिए ! वो सडाभी अरु करते हैं, या रसूलद्लाड ! ﷺ क्या मुडे गुनाड करते मेरे डौलाने मुडे देड लिया है ? आडाअे करीम ﷺ ने इर्माया, डं ! इतना सुनना था के अेक बीड डारी और डुड परवाज डो गर्थ !

★ डडारा येन, वडार सडकुछ कयूं यला जाता है ? ★

आप उरा सोयो ! अंदाजा लगाओ. डड डूरी दुन्यामें शिकायत और शिकावा कर रहे हैं के उडीन डैरों के नीये से डिसक रही है, आडरु डूंटी जा रही है, डडाम डीनिश डो रडा है, डरुतडा डतड डो रडा है, डौलत वगेरा यड सारी बीजे जानेकी डड सारी शिकायतें करते हैं, कडी डडने अपनी जिंदगी के डारे में गौर किया के यड कयूं डो रडा है ? कुआन से डूछने की कोशिश की ? के डौला नेअडत देकर डीन कयूं रडा है ? उसने डडोत कुछ डडको दिया. आप देड रहे हैं, डडंगाई कितनी डणड गर्थ यु.के. के अंदर ! आप देड रहे हैं डूरी दुन्या की यडी डोजिशन है, यड सारी आसाईशें कयूं डतड डो रडी हैं ? गरडी का यडं देडडरेयर कितना डणड गया ? कडी सोया डी नहीं जा सकता ! इतना देडडरेयर यडं कड डुआ ? कडी आपने सोया ? अद्लाडने सुकून कयूं डीन लिया ? तो कुआन में उसको डेनशन किया,

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعَمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ
حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاَنَّ اللّٰهَ سَبِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾

"यड ईस लिये के अद्लाड किसी कुैड से जो नेअडत उनुं देी थी डदलता नहीं, जब तक वो डूद न डदल जाअें." (सूरअे अन्फाल, ८/५०) याद रखें !

अल्लाह जब किसी को मक़ाम और मर्तबा देता है तो जब वो सलाखियतों का डामिल होता है तो वो मक़ाम और मर्तबा देता है। उससे सलाखियते रुकसत होती हैं तो मक़ाम छीन लिया जाता है, नेअमतें छीन ली जाती हैं। वरना अल्लाह की शान यह है के अल्लाह किसी बंदे पर जुल्म नहीं करता, وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَالَمِينَ "और अल्लाह बंदों पर जुल्म नहीं करता।" (सूरअ आले इमरान, 3/112) वो तो ऐसा सभी है के बिन मांगे उसने बड़ोत कुछ अता कर दिया। वो लेकर के क्या करेगा ?! इसी को क़ुरआनने हुसरी जगह कडा, مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَدَابِكُمْ "अल्लाह तुम को अजाब देकर के क्या करेगा ?" (सूरअ निसाअ, 4/140) तो छीन क्युं रडा है मेरे मौला ?! तो जवाब मिलेगा पहले तू अडल (Capable) था, अब तू नाअडल हो गया ! पहले तू इस नेअमत का डक़दार था तो तुझे नेअमत दी गई। लेकिन जब तू बढल गया तो उस नेअमत को तुजसे छीन कर किसी और को उमने अता किया। उम बढल गये, उमारा पास्ट देओ, उमारे अस्लाफ़ की जिंदगी का ज़रिअ लें।

★ शर्म नबी, जोड़े भुटा, यह भी नहीं वो भी नहीं ! ★

आ'ला उजरत, अजीमुल बरकत, इमामे इश्क़ो महब्बत, अल्लाहु अकबर ! उनकी जिंदगी का ज़रिअ लें, कितना जमीर को जिंजोणते हैं। उन लोगों के जमीर को जिंजोणते हैं के पास तौर पर जो अपने आप को आशिक़े मुस्तफ़ा कहते हैं और अल्लाह का बंदा कहते हैं। कहते हैं :-

दिन लख्ख में जोना तुजे, शब सुब्ह तक सोना तुजे
शर्मो नबी जोड़े भुटा ये भी नहीं, वो भी नहीं

या'नी अय आशिक़े रसूल अपने आप को कहनेवाले बंदे ! तुझे शर्म नहीं आती के इब्रामे नबी को मुंड दिभाना है ? तू रसूल के अहसान का यह बढला दे रडा है ? जो रसूल विलादत से जाडिरी तौर पर पर्दा इमराने तक, मैदाने मेहशर तक तुझे कभी नहीं भूले और न भूलेंगे, उस रसूल की शर्म

तुझे नहीं आती?! और अल्लाह का डर भी तेरे दिलसे निकल गया? आज हम बड़ोत सभ्त डालात से गुजर रहे हैं, सब से बणी चीज दिल बेयेन डो युका, दिल बेकरार डो युका. स्ट्रेस भतम डो पूरी हुन्या याह रही है.

★ गुनाहमें लम्मत है, धम्मत नहीं ! ★

याह रभमें! गुनाह करते वक़्त अच्छा लगता है और बाद में परताना पणता है, नेकी करते वक़्त तकलीफ़ होती है और जुने के अंदर भी मरने के बाद भी सुकून की दौलत अल्लाह अता करता है. और यह अेक जुम्ला जिंदगीभर याह रभना : गुनाह में लम्मत तो है धम्मत नहीं. धम्मत अल्लाह की धताअत में है. अल्लाह के रसूल ﷺ की धताअतमें है. हमें उस वक़्त तक धम्मत मिलती रही, जब तक हमने मुस्तफ़ा को थामने के साथ साथ धताअते रसूल ﷺ में हमारी जिंदगी गुजरती रही. और अब देखिये ना! दिल के सुकून के बारे में गुनाह के बारे में बयने को मे-शन किया गया. उदीष शरीफ़ के अंदर मौला अली कर्म अल्लाह अक़रिम इमार्ते हैं. अल्लाहु अक़बर! उजरत हुज़ैफ़ा धंने यमान रावी हैं. रिवायत करते हैं आक़ाअे करीम ﷺ ने इमार्था, युथ! स्पेशल आप लोग गोर से सुनिये! आक़ाअे करीम ﷺ ने धशाह इमार्था, "अगर किसी अजनबी औरत पर तुम्हारी निगाह पणे और तुम कौरन निगाह को मुका लो या फेर दो, मेरे आक़ा इमार्ते हैं धमान की लम्मत तुम अपने दिलमें महसूस करोगे." तुमने गुनाह की लम्मत छेण दी तो अल्लाहने तुम को दिल का सुकून अता इमार्त दिया. दिल में लम्मत पेदा होगी. आप जरा कोध लणकी देख लो, उस लणकी को देखकर डेरान! अब उसके तसव्वुर में उसका फोन नंबर तलाश करो, वोट्सअेप पर उसको मेसेज करो, स्कूल और कोलेज में यह चल रहा है! अब डिप्रेशन का आदमी शिकार डो गया, परेशानी का आदमी शिकार डो गया.

★ आराम और सुकून में इर्क है ! ★

अय रसूले गिरामी वक़ार के दीवानो! गुनाह छेणो! जब तक

के गुनाह से रिश्ता नहीं तोलोगे उस वक़्त तक कभी दिलका सुकून नहीं मिल सकता. कभी क़रार की दौलत नहीं मिल सकती. उज़ार तुम बंगले बना लो, मर्सीडीज़ खरीद लो, कुछ भी कर लो ! और ये बात याद रखना ! अक और जुम्हा आपकी समाअतों के उवाले कर रहा हूँ : "आराम और सुकून में इर्क है. नर्म गद्देसे आराम तो मिल सकता है सुकून नहीं मिल सकता. अच्छी कारों से आराम तो मिल सकता है सुकून नहीं मिलता. इस्ट क्लास के अंदर सफ़र करो, आराम तो मिल सकता है, सुकून नहीं मिल सकता !" अगर सुकून इन चीज़ों में होता तो यटाई पर बैठे डूबे सडाभा की जिंदगी पुरसुकून नज़र न आती, लेकिन सुकून अल्लाहने किस में रखा ? गुनाह छोड़ो ! अल्लाह तुम्हारे दिल को सुकून की दौलत से मालामाल इर्मा देगा.

★ तहजुदसे भी बेहतर क्या है ?! ★

नेकी करो ! लेकिन याद रखें, इस बात को ज़हनमें मडकूज़ रखें. उज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक رضي الله عنه इर्माते हैं : अल्लाहु अकबर ! बणी प्यारी बात इर्शाद इर्माते हैं, रोगाना अक लाभ दिरहम सडक़ा करने से ज़यादा, फिर आगे ज़हदे लाभ दिरहम, फिर आगे ज़हदे तीन लाभ दिरहम, फिर आगे ज़हदे चार लाभ दिरहम, फिर आगे ज़हदे पांच लाभ दिरहम, यहां तक के छे लाभ दिरहम तक पहुंचे और कहा, रोगाना छे लाभ दिरहम सडक़ा करने से ज़यादा में बेहतर ये समजता हूँ के अपने वजूद को अल्लाह की नाइर्मानी से ज़यादा लूं. किसीने उज़रते उसन बसरी رضي الله عنه से पूछा के, उज़ूर ! तहजुद के बारे में आप का क्या ज़्यादा है ? अब देजिये कितनी इज़ीलत है तहजुद की, आक़ाअे करीम ﷺ इर्शाद इर्माते हैं, जो नमाज़े तहजुद अदा करता है दिनमें अल्लाह उसके चेहरे को मुनव्वर कर देता है. और अक सडाभी रसूले आ'ज़म ﷺ की बारगाहमें डाज़िर आये और कडा, या रसूलल्लाह ! ﷺ "मैंने इलां सडाभी के घर पर रात को देखा के

नूर जो है न ! उसकी लकीर आसमान तक जा रही है. सरकार ये क्या मा'मला डोगा ? आकाशे करीम ﷺ ने इर्माया, जो शप्स नमाजे तहज्जुद अदा करता है उसका घर इस तरह से यमकता है जैसे तुम ऋमीन पर रहकर आसमान पे यमकते तारों को देखते हो न ! ऐसे इरिशते इसके घर को देजा करते हैं. यह नमाजे तहज्जुद है. लेकिन ! कुर्आन जर्घये हजरते हसन असरी رضی اللہ عنہ के जवाब पर ! हजरत हसन असरी رضی اللہ عنہ से पूछनेवालेने पूछा, के हुमूर ! तहज्जुद के बारे में आप का क्या जयाल है ?! कितना पावरफुल जवाब दिया, ईर्शाद इर्माते हैं, "दिन भर गुनाह से जय और रात को मजे लेकर सो जा, ये तहज्जुद से जेहतर है !" तहज्जुद भी पण्डो और ताका जांकी भी करो, कोई झयदा नहीं ! तहज्जुद भी पण्डो और गीजत भी करो, कोई झयदा नहीं है. तहज्जुद भी पण्डो और गेर मेडरम के साथ येटींग भी करो, कोई झयदा नहीं है. ईसी लीअे उजरत हसन असरी رضی اللہ عنہ ने इर्माया, दिनभर गुनाह से जय और रात को मजे लेकर सो जा ! तेरे लीअे तहज्जुद से यह जेहतर है. आज आप देजे उमारी पोजिशन ये है के नेकी भी करते हैं गुनाह भी करते हैं, तिलावत भी करते हैं गुनाह भी करते हैं. और यही वजह है के जेहतर कुछ करने के बाद भी उमारी जिंदगी में कोई जस तण्डीली नजर नहीं आती और इरार की दौलत उमें नसीज नहीं डोती. तो अय रसूले आ'जम ﷺ के दीवानो ! मैंने आप को स्ट्रेस का सोल्युशन जता दिया. स्ट्रेस का पहला सोल्युशन यही है, गुनाह छोण दो ! स्ट्रेस जूह जभूह जत्म हो जअेगा.

★ इस्तिगफार की जरकते ★

मैं अभी जब यहां आ रहा था तो मेरी आदत है, पेडले अशरकुल उलमा उयात थे तो मैं हुन्या के किसी भी मुल्क का दौरा करता उनसे ईज्जत लेकर करता. उनके विसाल के बाद मैं मेरे उस्तादे गिरामी से मैं ईज्जत लेता हूं और निकलता हूं. मगरिब की नमाज उनकी ईकतेदामें मैंने अदा

की और उसके बाद मैंने उनसे अर्ज किया के उजरत ईन्शा अल्लाह ! रातमें मेरी रवानगी है भरतानिया के लीअे, हुआ इर्माअे. और कुछ मसाईल थे उसके बारे में मैंने अर्ज किया के हुजूर हुआ इर्माअे ये सारे प्रोब्लेम सोल्व हो जाअे ?! बीमारियोंसे मुतालिक कुछ बातें थीं. बणी प्यारी बात उन्होंने इर्माई, ईशाद इर्माते हैं : मौलाना ! मैं जब बदनमें डरारत मेहसूस करता हूं, मुझे बुभार जैसा झीलिंग होता है तो मैं फोरन इस्तिगफार शुर् कर देता हूं और जैसे ही कुछ देर इस्तिगफार करता हूं तो मेरी तबीयत ठीक हो जाती है ! इस लीअे के गुनाह की वजह से यह सबकुछ होता है. जहां कुहरत से माझी मागी कुहरतने परेशानियां दूर इर्माई ! इस को कुर्आन में भी मेन्शन किया है : **مَا كَانِ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ** "और अल्लाह उन्हें अजाब करनेवाला नहीं जब तक वो बप्शिश मांग रहे हैं." (सूरअे अन्फाल, 1/33) यह कुर्आनने मेन्शन किया.

अब आपरी बात, आज के इस पर्यीसवे सालाना ईजतेमाअ के दूसरे रोज, कल भवातीन के ईजतेमाअ में गुफ्तगू हुई आज आप के सामने और जिंदगी रही तो ईन्शा अल्लाह ! कल आपरी पिताभ ईजतेमाअ का डोगा. ओलमा के पिताभ भी डोंगे, बडोत सारे लोग इस गुफ्तगू को सुनने के बाद इस टेन्शनमें डोंगे के या रब ! मेरा क्या डोगा ? मेरी तो जिंदगी गुनाहों से गुजरी है ! अब तो सुकून मिल ही नहीं सकता ! मेरी उम्र पंद्रह साल की थी तबसे मैं मआजल्लाह ! गुनाह कर रहा हूं ! अब तो पयास साठ साल की हुई, पता नहीं क्या डोगा मेरा ? तो आईअे, अक वाक़िअे की रोशनी में समजाई.

★ हम गुनेहगारोंकी समझके लिअे अक इफ्तनाक वाक़िआ ★

अक साडभ अक गलीसे गुजर रहे थे. अक मां अपने नव साल के बर्ये को मार रही थी. और मारते मारते कड रही थी, निकल जा ! कमबप्त ! मेरे घर से ! तेरे जैसे नाइर्मान बर्ये की मुझे कोई उजरत नहीं. ईतना

मारे, ईतना मारे, ईतना मारे जिस की कोई ईन्तेहा नहीं. धक्के मार के निकाल दिया. अेक भुजुर्ग जो थे वो ईस मंजर को भणे रडकर देभ रडे थे. देभुं भय्या क्या करता है ? नव साल का था, थोणा सा शउर भेदार डो युका था. उसने मार भरदाशत की, लेकिन ताना उससे भरदाशत न हुवा. उसने सोया, यलो अब घर छोण देता हूं. मां निकालती थी न के अब यला जा ! गया मार्केट में हुकानवालों से कडता है, मेरी मांने मुजे निकाल दिया, आप की हुकान में जाणु लगाने का काम डो तो मुजे दे डो, मैं ये काम करुंगा. मना कर दिया. किसी के घर पे गया मुजे रभ लो, आप के घर की साई सईई करुंगा. अेक जगड उसको कुभूल कर लिया गया के ठीक है, कल से तू आ जाना और यहीं रहना, भाने पीने का ली ईन्तेजाम डोगा और सारा काम तुजे करना है. उसने कडा, ठीक है.

उस के बाद वो थोणा सा नीये उतरा. सोय में पणा के यड जोभ कुभूल करुं या न करुं ?! और उसके बाद पता नहीं फिर से उसके कुदम मां के घर की तरई भण्डे. तवज्जोड याहुंगा ! वो भण्डा, मां के पास घर पर पडूंय गया. मां के दरवाजे पर पडूंय कर भेठ गया. वहां पर थका हुवा था, रो रो के थक युका था तो आंभ लग गई. कुछ देर के बाद मां ने दरवाजा भोला, देभा के भेटा सामने पणा हुवा है. गुस्से में थी फिर मारना शुर् किया. भुजुर्ग देभ रडे हैं. फिर मारना शुर् किया, कमभप्त फिर पलटकर के आ गया. तुजे मैंने निकाल दिया, तेरी शकल मैं देभना नहीं याडती. उसने कडा, मां तूने जभ निकाल दिया तो मैंने मन तो भना लिया था के कडी जोभ कर लुंगा और मुजे जोभ ली मिल गई थी. तवज्जोड याहुंगा, जिंदगीभर याद रभना ! जोभ तो मुजे मिल गई थी, मुजे भाना मिल जाता, पैसा मिल जाता, सबकुछ मिल जाता लेकिन मां का प्यार मुजे कौन देता ?! यड मां मुजे कहां से मिलता ?! भस ! मैं ने ली तय कर लिया के जान दे हुंगा लेकिन तेरा दामन नहीं छोणुंगा ! भस ईतना कडना था के मां की आंभो से आंसू निकले, भय्ये को दामनमें जगा अता इर्मा दी.

★ रखसे जयादा कोई महरबान नहीं ! ★

હજાર મુસીબતે આએ કુદરત કા દામન મત છોળો ! ઉસસે જયાદા કોઈ મહેરબાન હૈ હી નહીં ! ઝિંદગી મેં તુમને ગુનાહ કિએ, પલટ આઓ ઉસકી તરફ ! ઉસકા દામને રહમત પનાહ દેને કે લીએ તૈયાર હૈ. ઈસ લીએ અય રસૂલે આ'ઝમ ﷺ કે દીવાનો ! માયૂસ મત હો. હજાર ગુનાહ હો ચૂકે હૈ લેકિન ઉસકી રહમત આજ ભી હમારા ઈતેજાર કર રહી હૈ. ઓર જબ બંદા પલટકર ઉસકી તરફ આતા હૈ તો ઉસકી રહમત અપની આગોશ કે અંદર જગા અતા ફર્મા દેતી હૈ. અલ્લાહ કી બારગાહ મેં સચ્ચે દિલસે તૌબા કરો. આઈન્દા ગુનાહ ન કરને કા અહદ કરો, ઓર હર ગુનાહ સે રિશતા તોળ દો ઓર નેકી કે રાસ્તે કે મુસાફિર બન જાઓ. મેં યહ નહીં કહતા લેકિન અગર આપ કરે તો બહોત અચ્છી બાત હૈ, રોઝાના સો (૧૦૦) રકાત નફલ પઠ્ઠે, રોઝાના ત્રીન પારે કી તિલાવત કરે, યહ કરે તો સુખ્ડાનલ્લાહ !

ફાનૂને શરીઅત

(ભાગ-૧ તથા ભાગ-૨) (કુલ-૭૪૦ પૈજસ)

લેખક : અલ્લામા શમ્સુદીન જોનપૂરી رحمۃ اللہ علیہ

:: અનુવાદક ::

હાફેઝ મૂસા વેમી / ઈબ્રાહીમભાઈ વેમી

હદિયો : એક સેટના રૂા. ૨૫૦/-

પ્રકાશક

સુન્ની દા'વતે ઈસ્લામી-દયાદરા

મુ. પો. દયાદરા, તા. જિ. ભરૂચ.

મો. ૯૪૨૭૪૬૪૪૧૧

જેમાં અફીદા, તહારત, નમાઝ, રોઝા, હજ, ઝકાત, કુર્બાની, તલાક, અખ્લાકિયાત સંબંધી મસાઈલ દર્શાવેલા છે.

ઈલ્મે દીન શીખવું ફર્જ છે અને આ કિતાબમાં તદન જરૂરી મસાઈલો જ છે જેથી મુસલમાનના ઘર ઘરમાં આ કિતાબ હોવી જોઈએ. જેથી પુરૂષ, સ્ત્રીઓ, બાળકો સર્વે ઘર બેઠાં ઈલ્મ પ્રાપ્ત કરી શકે. કુર્આન તથા હદીષના પરથી ઉત્તમ જીવન બંધારણ રજૂ કરતી આ કિતાબનો અભ્યાસ અવશ્ય કરશો. મોલા તઆલા સૌને નેક તૌફીક આપે. આમીન.

:: Bank of Baroda ::
A/c.No.34620100000303
Razvi Kitab Ghar, IFSC:BARB0DAYADR

Phonepay/G.pay
Paytm
Mo. 9427464411

WhatsApp No.
Mo.9664521477



हर मुसीबत का इलाज : अल्लाहका ठिक !

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْأَنْبِيَاءِ وَ

الْمُرْسَلِينَ وَعَلَى آلِهِ وَاصْحَابِهِ الطَّيِّبِينَ الطَّاهِرِينَ-

أَمَّا بَعْدُ! فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ- بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ

"बेशक ! यह कुरआन वो राह दिखाता है जो सबसे सीधी है."

(सू. बनी इस्राएल, १७/८)

काबिले सद् तकरीम, मुभूलिसे कौमो मिल्लत, सरमायअे अडले सुन्नत, आभरअे अडले सुन्नत, अकियतुस सल्फ, अलीफअे हुजूर मुफ्तीअे आ'जमे छिंद, सरपरस्त व सरभराडे सुन्नी दा'वते ईस्लामी, उजरत अल्लामा कमरुज्जमां साडभ आ'जमी رحمته العالی, काबिले कद्द्र मोडतरम व मुकर्रम मुफ्तीअे आ'जम डोले-उ उजरत अल्लामा मुफ्ती शफीकुर्रडमान साडभ क़िबला رحمته العالی, अफ्रे गुजरात उजरत अल्लामा मौलाना मुहम्मदयूनस मिसबाही साडभ क़िबला رحمته العالی, काबिले कद्द्र, सादाते किराम ओलमाअे जवील अेडतेराम डाजरीनो नाजरीन... अस्सलामु अलैकुम व रडमतुल्लाहि व भरकातुड.

भेरे प्यारे आका عليه السلام के प्यारे ढीवानो ! आयअे करीमा के जिस छिस्से की तिलावत का मैंने शई छसिल किया उससे मुताद्विक कुछ मा'रुजात पेश करने से पडले आकाअे करीम रउफ़ो रडीम عليه السلام की

भारगाहे बेकस पनाहमें जिस तरीके से मैं पण्डाँ अकीहतो मडुब्बत में
डूबकर उसी तरीके से दुर्रहो सलाम का नजराना पेश करें.

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُورَ اللَّهِ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكَ وَإِلَيْكَ وَسَلَّمَ

★ हमें जो भलाई पहुंचे वो अल्लाह की तरफसे है ★

दिल की अथाह गहराईयों से तमामी उजरात को पय्यीसवां सालाना
सुन्नी ईजतेमा मुबारक हो ! अल्लाह रब्बुल ईज़त عز وجل सब की
काविशों को अपनी भारगाह कुबूल इर्माये. भडोत सारी भातें अल्लामा
यूनूस मिसबाही साडभसे, मुफ्ती शफीकुर्रहमान साडभ डिब्लासे और डमारे
सरपरस्ते आ'ला की तरफ से आपने समाअत इर्माई. मैं सिई कुर्आन की
रोशनी में अेक भात अर्ज करुंगा : مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ : "अय
सुननेवाले ! तुजे जो भलाई पहुंचे वो अल्लाह की तरफसे है. (सू. निसाअ,
४/७८) وَاللَّهُ خَيْرٌ بِمَا تَعْلَمُونَ (सूरअे आले ईमरान, ३/१५३) ये जो कुछ भी है अल्लाह का इजल
है. "यह मेरे रभका इजल है" (सू. नमल, २७/४०) और
अेक शेअर की रोशनी में अर्ज करना थाडुंगा के,

यह सब तुम्हारा करम है आड़ा के भात अब तक भनी हुई है ! (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)

मेरे प्यारे आड़ा صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के प्यारे दीवानो ! ईतना तवील सइर मुश्किल
डावात के भावजूद तय करने में जिन जिन उजरातने डमारा साथ दिया,
याद रभमें ! वो लोग अैसे थे और जो जानते थे और जानते हैं, जैसा के
हुजूर मुफ्किरे ईस्लाम आज भी सरपरस्ती इर्मा रडे हैं, रडनुमाई इर्मा
रडे हैं. वो जानते हैं कुर्आनने कडा है के, आप भी याद रभगेगा :

وَتَكَوَّنُوا عَلَىٰ أَيْدِيهِمُ وَالسَّمَاءِ
 करो." (सूरअे माईदा, प/र) तो उन्डोंने नेकी देभी, सपोट किया, अल्लाह
 की आयत पर अमल करने का सिला अल्लाह दोनों जहां में अता इर्माअेगा.

★ काम दुन्या देभती है और नियत भुदा देभता है ★

मेरे प्यारे आका! ﷺ के प्यारे दीवानो! बडोत कुछ आप सुन यूके
 हैं. केसे ? किस तरीके से ? नाईन्टिन् नाईन्टी सेवन (१९९७) और सभ
 सारी थीजें आप सुन यूके. में ईस पर कोई रोशनी डालना नहीं याडता
 और मेंने जो अर्ज किया जिंदगीभर याद रभिअेगा के कभी भी आप के
 ऋरिअे अल्लाह कोई अख्खा काम ले ले तो उसे अपना कमाल न
 समजे ! उसे अल्लाह का करम समजे. जिंदगीभर याद रभ्भे. और
 ईसमें और अेक थीज का में ईजाका कर हूं. जयपुर की सरजमीन पर जब
 S.D.I. Education Center की बुनियाद रभ्भी जा रही थी तो उस वक़्त
 कई उल्मा तशरीफ़ इर्मा थे. और उन्डोंने बडोत सारे तारीफ़ी कलेमात और
 काम के उवाले से उन्डोंने कडा, और यकीनन ! सुनकर आदमी को मर्सरत
 (भुशी) डोती है के सारा काम उमारे भाते में जमा डो रडा है, ईतनी तारीफ़
 डो रही है, तो उस वक़्त मेंने सिर्फ़ अेक जुम्ला अर्ज किया था ईसे भी
 मुबल्लेगीन भास तौर पर जडेन के अंदर रभ्भे. सभ काम देभकर तारीफ़
 करते हैं. कोई S.D.I. Education Center देभकर तारीफ़ करेगा, कोई
 मुबल्लेगीन के सर पर अमामा देभकर तारीफ़ करेगा, कोई जामिआत के
 सिलसिले में सुनकर तारीफ़ करेगा, स्कूल देभकर तारीफ़ करेगा, याद रभ्भे!
 काम दुन्या देभती है और नियत भुदा देभता है. ईस लिअे
 जिंदगीभर याद रभियेगा, दुनिया दे देकर कुछ नहीं ! नियत अगर
 दुरुस्त रही तो फिर छोटा सा काम भी अल्लाह कुबूल कर ले तो
 नजात का सामान बन सकता है. और जिंदगीभर सभ कुछ कर
 के भी नियत अगर दुरुस्त नहीं तो कुदरत की डारगाह के अंदर
 कोई थीज कुबूल नहीं डोती. नियत दुरुस्त रभ्भो. ईस लिअे मेरे

ईमामने यूं ही नहीं कड़ा, वो काम करते थे और बड़ोत कर युके थे फिर भी यही कड़ रडे थे :- "काम वो ले लीजये तुम को जो राजी करे !"

★ यह अल्लाहका इज़्जल है और उसके रसूल का अहसान है ! ★

नियत का दुरुस्त होना ये बेपनाह ज़रूरी है, इस लीये आज़ाअे करीम عليه الصلوٰة والسلام अपने सखाबासे इर्माते हैं के मुजे मेरी उम्मत का शिर्क में मुब्तिला होने का भौंक परेशान कर रडा है. तो सखाबाने अर्ज किया था, या रसूलल्लाह! عليه الصلوٰة والسلام क्या आप की उम्मत भी शिर्क में गिरफ़तार होगी?! तो मेरे आज़ा عليه الصلوٰة والسلام ने इर्माया, यहां शिर्क से मुराह शिर्क असगर है या'नी रियाकारी. हुन्या को दिभाने के लिये कोई काम करे. तो इस बात को जडेन के अंदर रफ़में. मेरे सारे साथी जिन्होंने आज तक के मेरे इस सफ़र में मेरा साथ दिया कभी भी इसे अपना कमाल न समजना, इसे रब का इज़्जल समजना. वो जिससे याडे, जब याडे, जितना याडे, जो याडे काम ले ले, यड उसका करम है के उसने अपने दीन के काम के लीये डमें तौफ़ीक़ अता इर्माई.

मुजे यहां पर अेक प्यारी बात याद आ रही है. डजरत अैयूब अला नभीय्यिना عليه الصلوٰة والسلام का सफ़्र भणा भशदूर है और उनके सफ़्र की तारीक़ अल्लाडने भुद इर्माई और इर्माया, نَعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ और यही तक नहीं बल्के इर्माया, "क्या ही बेडतरीन बंदा है!" (सू. स़ाद, 37/44) तो अब रबने तारीक़ की तो डजरत अैयूब عليه الصلوٰة والسلام थोणे मयल गअे के मौलाने मेरी तारीक़ की ! तो अर्ज कर बेठे, मेरे करीम ! मैंने कैसा सफ़्र किया ना ! तो रबने इर्माया, अैयूब ! तुजे सफ़्र की तौफ़ीक़ किसने अता इर्माई ? जब उन्डोंने ये सुना तो अपना गिरेबान इाण युके !

तो जितना भी अघिपमेन्ट है, कामयाबी है, यह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है, और उसके करम से है, और उसी के इज़्जल से है. वना डम जैसे गुनेडगार और वो काम जो अल्लाड के मक़भूल बंढे और अंभियाअे किराम عليهم السلام करते थे उस काम के लिये अल्लाड

को हमारा इन्तेजाब करना ये क्या कोई कम सआदत की बात है ?! तो ये सबकुछ अल्लाह का करम है, उसके रसूल ﷺ का अहसान है.

★ यह बुजुर्गों की दुआओं का इंतजान है ! ★

और यहां ये भी याद रखें के बुजुर्गों का इंतजान भी होता है. मेरा अपना अक जुम्ला है, मैं अकषर कडा करता हूँ के, हो यीजों अगर किसी को लग जाये, हो यीजों में से कोई अक यीज भी लग जाये तो उसका काम बन जाता है. या तो किसी बुजुर्ग की नजर लग जाये, या किसी बुजुर्ग की दुआ लग जाये. तो याद रखें ! हुजूर मुफ्किरे इस्लाम, मेरे उस्तादे गिरामी उजरत रईसुल मुफ्स्सिरीन जिन्होंने आज मेरी बात डूई तो सब उलमा को और आप सबको सलाम भी पेश किया. तो ये सबकी दुआओं ईसी के साथ सैयदना गौषुषुकलैन, ज्वाजा गरीब नवाज, मज्दूम सिम्नां, इमामे ईश्की मडुब्बत और मेरे पीरो मुर्शिद सरकार हुजूर मुफ्तीये आ'जमे खिन्द, और जुम्ला अवलियाये किराम رحمۃ اللہ علیہم اجمعین के इंतजानसे उल्मा के तआवुन से आज इतना लंबा सफर हमने तय किया. अल्लाह की बारगाह से उम्मीद है के मौला मज्जद हमें इस क़िस्म के काम की तौफ़ीक़ अता इर्माये और परवरदिगार जिंदगी की आभरी सांस तक हमसे दीने मतीन की भिदमत लेता रहे.

★ सबसे सीधा रास्ता दिखानेवाली किताब : कुरआन ! ★

अब आइये मैंने जिस आयये करीमा के खिस्से की तिलावत का शर्क़ ड़ासिल किया उसकी रोशनीमें कुछ बता दूं. अभी मौलाना मुहम्मदहुसैन साहब अक बरये के बारेमें बता रहे थे. इस क़िस्म के बडोत सारे बरयों के प्रोब्लेम्स यहां पर हैं तो मैं यादता हूँ के बडोत कुछ वड नडीं कर सकते है तो कुरआन की रोशनीमें प्रोब्लेम्स के सोल्युशन को भी तलाश करें और कुरआनने जो सोल्युशन बताया है वो सोल्युशन पर अमल करें. अल्लाह ﷻ ईशाद इर्माता है, "إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّذِينَ هُمْ عَنْ قَوْمِهِمْ" "बेशक ! यह कुरआन सबसे सीधा रास्ता दिखानेवाली किताब है." (सू. बनी ईस्राईल,

१७/८) सबसे सीधा रास्ता अगर कोई किताब दिभा सकती है तो ये अल्लाह की किताब दिभा सकती है और इसी किताब से जब तक के उम्मत मुस्लिमा का तअद्लुक मजबूत नहीं होगा यह क़ौम कामयाबी और कामरानीसे उमकिनार नहीं हो सकती. आज का सबसे बड़ा प्रोब्लेम और सबसे बड़ी परेशानी, के बड़ोत कुछ होते हैं वो भी ई-सान बेयेनी का शिकार है, बड़ोत कुछ होते हैं वो भी ई-सान बेकरारी का शिकार है, बड़ोत कुछ होते हैं वो भी ई-सान स्ट्रेस का शिकार है और बड़ोत सारे मसाएल (मुश्कलियां) ऐसे हैं जिसमें बड़ोत सारे ई-सान के सरो सामानी के आलममें ये सोचने पर मजबूर हैं के हम के सरो सामानी के आलममें प्रोब्लेम का सोल्युशन कैसे करें? आइए उसकी तरफ़ क़दम बण्डाते हैं और समजने की कोशिश करें. अल्लाह रब्बुल ईज़ज़त عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ने ईशाद फ़र्माया :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۖ وَسَبِّحُوا بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

"अब ईमानवालो ! क़धरतसे अल्लाह का जिक्र करो और सुबहो शाम अल्लाह की पाकी बयान करो." (सू. अलजाय, ३३/४१, ४२)

★ क्या प्रोब्लेम्स का सोल्युशन अल्लाह के जिक्रमें है ?! ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हो सकता है आप के हाशियअे बयालमें यह बात आये के क्या प्रोब्लेम का सोल्युशन अल्लाह के जिक्र के अंदर मौजूद है के हम अगर अल्लाह ! अल्लाह ! करे तो हमारी तकलीफ़ें दूर हो जायेंगी ?! तो उसको भी क़ुर्आनने स्टेप बाय स्टेप समझाया है और बणे अख़रे अंदाज़में समझाया है. और जिक्र के इवाएँद को किस तरीक़े से हासिल किया जाये उसका तरीक़ा भी अल्लाहने अपनी किताब के अंदर बताया है. आइए, क्यूं के ये मोडर्न अेज्युकेशन के सिलसिलेमें दुन्या के अंदर माना जानेवाला मुल्क है के यहां पर सायन्स की तरफ़, टेकनोलोज़ी की तरफ़ ई-सान बणी तेज़ीसे बण्ड रहा है, और हर बाप की तमन्ना है के मेरा बरया मोडर्न अेज्युकेशन के अंदर टोपर हो जिसकी वजहसे उसका इयुयर ब्राईट हो जाये और दुन्या के अंदर वो अख़री पोज़िशन पर रहने

डूबे जिंदगी गुजारे. ईस्लामने मना नहीं किया.

★ अक़लवाला कौन ? ★

अक़सोस की बात यह है के सायन्स पण्डने के बाद हमारे बरथे कुर्आन पर अतूतेराज करते हैं या रसूले आ'उम ﷺ की ता'लीमात के सिलसिलमें डाउट (Doubt) के शिकार हो जाते हैं, भुदा की वलदानियत के बारे में क़िस्म क़िस्म के सवालात करने लगते हैं. रीज्ज क़्या है? उन्होंने हुन्या के सायन्टिस्ट को तो पण्डा, कुर्आन को नहीं पण्डा! ईस्लाम और कुर्आन, सायन्स के उलूम को डासिल करने से नहीं रोकता, लेकिन सायन्स डासिल करनेवाला लटक कभ सकता है, राड कभ लूल सकता है और कभ सीधे रास्ते का मुसाफ़िर बन सकता है, उसे मैं कुर्आन की अक़ आयत की रोशनीमें समजाता हूँ : **"बेशक ! إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْاٰخْتِلَافِ الْاَيِّلِ وَالنَّهَارِ** आसमानो ज़मीन की तप्लीक़ में रातो दिन के आने जानेमें निशानी हैं अक़लवालों के लीअे." (सू. अक़रड, २/१६४) अक़लवाला ही तो ईन थीजो की तलाश करता है. आज हेषों, सायन्स तरक्की कर रही है, वो क़्या कर रहे हैं? स्पेस, उधर कंट्रोल करने की, वहां याह पर ज़मीन की बात, नजाने क़्या क़्या हो रहा है! आप मुजसे ज़यादा रिसर्य करते हैं और मुजसे ज़यादा ज़ाननेवाले हैं. लटक क्यूं रही है यह क़ौम?! यहीं तक अटक जाने की वजह से क़ौम लटक रही है!

अक़लवाला सिर्फ़ वो नहीं है जो आसमान और ज़मीन की तप्लीक़ पर गौर करे, जो रीसर्य करे, जो महेनतो मशक़त करे, जो सिर्फ़ रातो दिन के आने जाने के बारेमें गौर करे और उसके बारे में रीसर्य कर के हुन्या के सामने पेश करे, अक़लमंह सिर्फ़ वो नहीं है. कुर्आनने फिर आगे मेन्शन किया :

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَمًا وَقُوْدًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا

"जो अल्लाह की याह करते हैं बणे और बैठे और करवट पर लेते और आस्मानो ज़मीन की पेदाईशमें गौर करते हैं. अय रब ! हमारे तूने

ईसे बेकार नहीं पेदा फ़र्माव्या." (सूरअे आले ईमरान, 3/94)

अक़लवाला सिर्फ़ तड़कीक़ नहीं करता, उस तड़कीक़ के साथ साथ वो भण्डा होता है तो अल्लाह का ज़िक्र करता है, वो बेठता है तो अल्लाह का ज़िक्र करता है, वो करवट लेता है तो अल्लाह का ज़िक्र करता है, वो आसमानो ज़मीन पर गौर करता है तो क़ुल उठता है : رَبَّنَا مَا خَلَقْنَا هَذَا بَابًا "मेरे करीमने ईसको बेकार नहीं पेदा किया."

अय रसूले आ'जम ﷺ के हीवानो ! तो सायन्स का ईल्म हांसिल करनेवाला भय्या उस वक़्त भटक सकता है जब उसकी ज़बान पर अल्लाह का ज़िक्र न हो. जब अल्लाह के ज़िक्र से वो गड़बड़ भरतेगा और सायन्स को सभक़ुछ समझ कर उस पर मछेनत करेगा तो भटकने के ईम्कानात हैं. लेकिन ! अक़लवाला कौन ?! क़ुरआन उसके बारेमें क़ुलता है जो ये सारी चीज़ों पर गौर तो करता है, लेकिन भण्डा होता है तो अल्लाह का ज़िक्र करता है, बेठता है तो अल्लाह का ज़िक्र करता है, करवट लेता है तो अल्लाह का ज़िक्र करता है.

★ उजरते सुलैमान عليه الصلوة والسلام के शागिर्द का क़माल ! ★

आज उमारे भय्ये सायन्स का उलूम हांसिल करते करते मस्जिदसे फ़ासला भण्डा लेते हैं, क़ुरआन से फ़ासला भण्डा लेते हैं, हीनसे फ़ासला भण्डा लेते है. क्या सायन्टिस्ट मुसलमान नहीं गुजरे ? ज़रा उन्की लाईफ़ पण्डो. वो सायन्टिस्ट भी थे और वलीअे कामिल भी आप को नज़र आयेंगे. क़ुरआने मुक़द्दसमें अेक वाक़िआ मौजूद है, उजरते सुलैमान عليه الصلوة والسلام का. उजरते आसिफ़ बर्षियाने उजरते सुलैमान عليه الصلوة والسلام से अर्ज़ किया, "أَنَا أَتَيْتُكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ" "के पलक के ज़पकने से पहले मैं तप्त बिट्ठीस को लाकर आप के सामने रभ हुंग्गा." (सूरअे नम्ल, 29/80) सेंकणों किलोमिटर की दूर पर तप्त, वजनी तप्त और ताक़त का आलम ये के उजरते सुलैमान عليه الصلوة والسلام की पलक ज़पके उससे पहले वो तप्त लाकर के सामने रभ हे. कितना मोर्डन टेक्नोलोज़ी का दौर ! या'नी उस दौरमें

टेकनोलोजी नहीं थी, लेकिन! उजरते सुलैमान عليه السلام के सलाबी की पोजिशन यह थी के वो वहांसे लाकर रहे है. लेकिन! कुर्बान जोईये, क्या यीज थी उ-के पास, क्या यीज थी?! तो कुर्बान कइता है, उ-के पास किताब का इल्म था, किताब का इल्म." (सूरअे नम्ल, २७/४०) तो क्या सायन्स की किताब का इल्म था? नहीं! उस जमाने का जो सहीफा था वो सहीफे का उ-हें इल्म था और फिर कुर्बान जाअें हुन्या के डर सायन्टिस्ट को उजरत सुलैमान عليه السلام यह पयगाम देते नजर आते हैं के सुनो! यह मेरे शागिर्द का कमाल मैं कइ तो सकता हूं और यह भी कइ सकता हूं के जब मेरे शागिर्द और मेरे सलाबी की यह पोजिशन है तो मेरी पोजिशन क्या होगी?! लेकिन! केइ के, هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي "यह मेरे रब का इज़ल है!" (सूरअे नम्ल, २७/४०) और फिर कइते हैं, इस के बाद के जुम्ले पर गौर किजिये, لَيْبَلُونِيْءَ أَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ "अल्लाह मुझे आजमाता है या आजमायेगा के मैं शुक्र करता हूं या नाशुकी." (सूरअे नम्ल, २७/४०) पता चलता कोई भी कमाल नसीब हो जाअे, तुम बणे से बणे सायन्टिस्ट बन जाओ, बणे से बणे अेजिनियर बन जाओ, इसे अपना कमाल न समजना! जब तुम هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي (सूरअे नम्ल, २७/४०) कइोगे तो Atheism! के शिकार नहीं हो सकते, देहरिये (नास्तिक) नहीं बन सकते. तुम्हारी तवज्जोह अल्लाह ﷻ से उट नहीं सकती. तो तुम्हें क्या करना है? सायन्स के उलूम को भी हासिल करो, और उठते, बैठते अल्लाह का जिक्र भी करते रहो.

★ अल्लाह को कषरतसे याद करना : कामयाबी का राज! ★

मेरे प्यारे आका ﷺ के प्यारे दीवानो! उजरते मूसा عليه الصلوٰة والسلام को रब्बे क़दीर ﷻ ने फिराओन के मुक़ाबले में भेजा. इर्माया, اِذْ هَبَّ اِلَيَّ فِرْعَوْنُ اِنَّهُ كَفِي "तुम दोनों भाई जाव, फिराओन की तरफ़ के वो भागी हो गया है." (सूरअे ताहा, २०/४३) आप सोर्यें! उजरते मूसा عليه الصلوٰة والسلام को मोजिजात दीये गअे. उजरते मूसा عليه الصلوٰة والسلام को परवरदिगार

ﷻ ने हमकलामी का शर्क अता इर्माया. लेकिन ! साथमें क्या इर्माया, उसे सुनें आप : اِنَّكَ وَاَخُوكَ بِاَيْتِي "तुम और तुम्हारे भाई मेरी निशानियां लेकर के जाओ." (सूरअे ताहा, २०/४२) ये तो तुम्हारा काम डो गया, लेकिन ! अगर तुम याडते डो के ँन निशानियों से ताधीर पैदा डो जाअे, لا تَنْبِيئُكَ ذِكْرِي "तो मेरे जिक से गइलत मत डरतना !" (सूरअे ताहा, २०/४२) पता यला अल्लाड के नाम की ताधीर यड है के मदे मुक़ाबिल के सामने निशानियां लेकर जाव और अल्लाड का नाम ले लो, और उसके जिक की डरकत से अल्लाड तुम्हें कामयाबी अता इर्माअेगा. لا تَنْبِيئُكَ ذِكْرِي (सूरअे ताहा, २०/४२) और आगे बण्डिये. आप के मुक़ाबले में दुश्मन ताकतों से लेस हैं. सिच्युअेशन अैसी है के आप क़लील तादाद के अंदर हैं और मदे मुक़ाबिल जो है पूरी तवानाई के साथ क़पीर झेज और जदीद अस्लडों के साथ है, लेकिन ! आप की पोजिशन अैसी नडीं. जंगे बद् को द्रेज दिजिये अल्लाडने कामयाबी अता इर्माई, बडोत कम साजो सामान और ३१३ (तीनसो तेरड) सडाभा थे. तलाश करो उन यीजों को जिन यीजों की बुन्याद पर अल्लाडने कामयाबी अता इर्माई थी. यडां ली कुर्आन कडता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقَيْتُمْ فِتْنَةً فَاتَّبِعُونَا ۗ وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

"अय इमानवालो ! जब तुम्हारी मुठभेण डो जाअे क़ातिल के साथ तो षाबित क़दम रडो और अल्लाड को क़षरत से याद करो, ता के अल्लाड तुम्हें कामयाबी अता इर्माअे." (सूरअे अ-झाल, ८/४५) यड है अल्लाड का जिक !

अय रसूले आ'लम ﷺ के प्यारे दीवानो ! आप मआश (रोजी) के मरअले को ले लीजिये इकोनोमी के मामले को ले लीजिये. आज निकलते हैं माईन्ड बनाकर कर के यड करना है, वड करना है, इतना कमाना है, इतना काला, इतना पीला, इतना सुक़ेद, यड सभ कुछ करना है. और सिच्युअेशन यड है के अब जो काईसिस है और जो अलमी इस वक़्त मेंडगाई बण्ड रडी है, आदमी सोच रडा है के क्या डोगा ? कैसा डोगा ? किस तरीक़े से यलेगा ?

लेकिन यहाँ भी कुर्आनने बणी प्यारी बात की, अल्लाह ईशाद इर्माता है :
 وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا "अकषरत अल्लाह की याद करो." (सू. शूरा, २६/२२७)

★ रोजी में भरकत याहते हो ? अल्लाह को मत
 भूलना ! ★

यहाँ भी इर्माया, "तुम निकलो !" डालां के नमाज पण्ड कर के आ
 रखा है. नमाज भी अल्लाह का जिक्र है. وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِدِكْرِي "नमाज क़ायम
 करो, मेरी याद के लीये." (सूरअे ताहा, २०/१४) अमी नमाज पण्डकर के
 निकला फिर भी मेरा मौला इर्माता है, فَأَنْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ "जमीन पर फैल
 जाओ." وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ "अल्लाह का इज़ल तलाश करो." (सूरअे
 जुम्आ, ६२/१०) लेकिन ! मेरे भंढो ! अल्लाह का इज़ल तलाश करने या'ने
 रोजी तलाश करने के लीये निकलो तो ज़बान पर गाने न हो !
 وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا "अल्लाह के जिक्र कषरत के साथ करो." (सूरअे शूरा,
 २६/२२७) यहाँ भी कुर्आन यही कह रखा है. अंदाज़ा लगाओ आप ! जिक्र
 के डवाले से कडा जा रखा है. और जब कोई शप्स तभीअत के अेअूतेभार
 से भेयेन छोता है, भेकरार छोता है, गुनाहों की तरफ़ उसके क़दम बण्डते हैं
 तो उसकी सभसे बणी वजह छोती है, "गइलते जिक्र." जब आदमी अल्लाह
 को याद करना भूल जाओ तो कुर्आन कडता है,
 وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿۳۷﴾
 आये (शअ कोरी हो, दूर हो) रहमान के जिक्रसे, हम उस पर
 अेक शैतान तर्पनात करे के वो उसका साथी रहे." (सूरअे जुफ़र, ४३/३६)
 वाजेल लइज़ों में इर्मा दिया, ईन्सान के दिल से शैतान थिपक कर
 के रहता है. लेकिन जैसे ईन्सान कडता है, अल्लाह ! भाग जाता है शैतान !
 भाग जाता है. उदीष शरीफ़ के अंदर है ! "अल्लाह का नाम सुनते ही भाग
 जाता है शैतान !" और जाहिर सी बात है, जिस क़ौम का डाल यड हो के
 अल्लाह को भूल करके बैठी है.

★ अल्लाह को कहां कहां हम भूल रहे हैं ?! ★

और आप कहेंगे अल्लाह को कहां भूले ? मैं आप को याद दिल देता हूँ कहां कहां हम भूले ?! बसोत सारे घर जैसे हैं जहां जाने से पहले "बिस्मिल्लाह शरीफ़" नहीं पण्डा जाता ! भूल गये न अल्लाह को ! जाने के बाद "अल्लहुमुद्दिल्लाह" नहीं पण्डते ! भूल गये न अल्लाह को ! धीक आये तो कहते हैं, सोरी ! नहीं पण्डते, अरे ! उह तो यह है के अगर कोई पानी पिला दे तो हम "थे-क यु" नहीं भूलते ! लेकिन "अल्लहुमुद्दिल्लाह" भूल जाते हैं ! यह हमारी सिन्युअेशन हो गई है. यह हमारा डाल हो गया है. भूल गये, भूल गये हम ! आज़ा अे करीम (ﷺ) ईशाह इर्माते हैं, जो शप्स मेडकिल में भेठा और उठने से पहले अल्लाह का जिक्र न किया वह असारेमें है, वह लोस (Loss) के अंदर है, वो नुकसान के अंदर है. बल्के उदीष शरीफ़ में आज़ा अे करीम (ﷺ) ने ईशाह इर्माया, "जो शप्स रात को सोये, सोने के वक़्त अल्लाह का जिक्र न करे, आज़ा अे करीम (ﷺ) इर्माते हैं, वो असारेमें है. अब ईस क़ौम का डाल ये हो के रात को गाना सुनकर सोती हो, ईयर फ़ोन लगा के सब कुछ सुन रहे होते हूँ सो रहे हों, अल्लाह का नाम नहीं ! और फिर असारे की शिकायत हम कर रहे हैं, फिर घाटे की शिकायत हम कर रहे हैं ! बल्के आज़ा अे करीम (ﷺ) ने ईशाह इर्माया, "वो घर कुब्रस्तान है जिस घर के अंदर अल्लाह का जिक्र नहीं होता." और सरकार (ﷺ) ने ईशाह इर्माया, "जिक्र न करनेवाले की पोज़िशन जिंदा और मुर्दे जैसी है. जिक्र करनेवाला जिंदा है और न करनेवाला मुर्दा है." हम आज मुर्दा हो गये हैं ! आज हम मुर्दा हो गये ! कितना जिक्र किया जाये ? आज जिक्र क्यूं भारी पण रहा है ? मैं कोई इतना नहीं लगाऊंगा !

★ अल्लाह का जिक्र मुनाफ़िफ़ को भारी लगता है ! ★

लेकिन कुछ आदतें बता हूँ के जिक्र किस पर भारी है ? अरे यार ! बसोत टार्थम लग जाता है, यार ! यलो बाहमें देभते हैं. मैं ने सो बार

तो जिक्र कर लिया ! ये पोजिशन है. थोड़ा सा जिक्र कर लेने के बाद ये सिन्धुअेशन होती है. तो कोई मुफ्तसर जिक्र करता है ? जिक्र किस पर भोज बनता है ? अल्लाह का नाम लेना किसको भारी पणता है ? अल्लाह का जिक्र किसके लिये भोज बनता है ? और कोन कम जिक्र करता है ? उसे कुर्आनमें मेन्शन किया है : لَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ मुनाफिक के बारे में कुर्आनने बताया, "वो अल्लाहका जिक्र नहीं करता, मगर बड़ोत मुफ्तसर, बड़ोत मुफ्तसर." (सूरअे निसाअ, ४/१४२) आज मोमिनाना आहत जो हमारे अंदर डोनी याडिये वो आहतें हमसे रूबसत डो युकी और हमारी जिंदगी उन आहतों की तरफ बण्ड रही है जो आहतें निफाक (मुनाफिकत वाली) की हैं, और जो आहतें तबाही और बरबाही की हैं. अय रसूले आ'उम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के प्यारे दीवानो ! इस थीजको अच्छी तरीके से जहनमें रफ्तो ! कुर्आनने वाजेड लङ्गोंमें कडा है : لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَهُمْ أَنْفُسَهُمْ ۗ "उनकी तरड मत डो जना जिन्डोंने अल्लाहको भूला दिया तो वो भुड इरामोशी की परेशानी के शिकार डो गअे. अल्लाहने उनको भुड भला में डाला." (सूरअे डशर, ५८/१८) तो अल्लाहको याद करो. कुर्आन कडता है, وَأَذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبْتَئِلِ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝ "और अपने रब का नाम याद करो, और सबसे टूटकर उसीके डो रडो." (सूरअे मुज्जम्मिल, ७३/८)

★ अल्लाह के जिक्र के बगैर कोई ता'लीम हासिल न करो ★

मेरे प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के प्यारे दीवानो ! हुजूर मुफिकिरे इस्लाम को अल्लाह द्वाराजगीअे उम्र बिल षैर अता इर्माअे, इनका साया हम सब पर द्वाराज इर्माअे, हम इनके कलेमाते षैर और अइकार से इस्तेफादा करते रडे. हुजरतने अक आयत की तिलावत इर्माअे "पणडो ! अपने रबके नामसे जिसने पेदा किया." (सूरअे अलक, ८६/१) यडां ली देबिये आप, जब तक इरिशता इकरा कडता रडा, हुजूरने नहीं पणडा. लेकिन जैसे ही इरिशतेने कडा,

بِاسْمِكَ (अपने रब के नामसे) तब हुजूरने पण्डना शुरू किया. हुजूरने मिजाज दिया, अल्लाहके जिक्के जगैर कोय तालीम ली हासिल न करो. तालीम ली हासिल करो तो अल्लाहके जिक्के साथ. मुक़दम ! (अग्र स्थाने) अल्लाहकी याद मुक़दम ! हम आज हर किसी की ली बात मान लेते हैं. कुर्आनने मना किया. وَأَنْتُمْ مَنْ أَنْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا "उनकी ईताअत मत करना जिनका हिल अल्लाहके जिक्केसे गाईल है." (सूरअे कउफ़, १८/२८) अय रसूले आ'उम ﷺ के दीवानो ! तो अल्लाह का जिक्के सबसे बणा है. وَلَنْ نُكْرِمَهُ بِاللَّهِ أَكْبَرُ "और बेशक ! अल्लाहका जिक्के सबसे बणा है !" (सूरअे अ-कभूत, २८/४५) ईसी लीये जिनका मक़ाम सारे अंबियाके बाद सबसे अइजलो आ'ला है ! वो सैयहुना सिदीके अकभर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ईर्माते हैं, मुजे पता यल जाता है के मेरा रब मुजे याद करता है. पूछा गया केसे पता यलता है ?! कडा, तुमने कुर्आन नहीं पण्डा ?! فَادْكُرْهُ فَاذْكُرْهُ كُمْ "जब मैं अल्लाहका जिक्के करता हूं तो अल्लाह मेरा यर्या ईर्माता है." (सूरअे बक़रउ, २/१५२) हम जमीनवालों में बेठकर अल्लाहका जिक्के करें वो ईरिशतों की जमाअत में हमारा जिक्के ईर्मातेगा.

★ ८८ बीमारियों का इलाज : ला हौल... ★

अय रसूले आ'उम ﷺ के दीवानो ! अल्लाह का जिक्के करो. अल्लाह को याद करो, तुम्हारे सारे काम बन जायेंगे, सारी परेशानियां दूर हो जायेंगी. स्ट्रेस के सोल्युशन के लिये ईन्सान कहां जाता है ? कोई दूग ईस्तेमाल कर रहा है, कोई आल्कोहोल ईस्तेमाल कर रहा है, कोई जिना के अइडे पे, कोई पब पे, कहां कहां जाकर अपने स्ट्रेस का सोल्युशन करता है ! लेकिन रसूले आ'उम ﷺ ने स्ट्रेस का सोल्युशन क्या बताया ? मेरे आइया ईशाह ईर्माते हैं, لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ "यल निन्ानवे (८८) नाईन्टी नाईन बीमारियोंका इलाज है, उनमें से सबसे छोटी बीमारी ली स्ट्रेस है, गम है." आप अंदाजा लगाईये ! जब कोई

पण्डता है तो अल्लाह उसके गमको दूर इर्मा दिया करता है, उसके जिह के अंदर प्रोब्लेम का सोल्युशन है. स्ट्रेस है, हिल भयेन है, उदास है, हिल गमगीन है, परेशान है, अरुण नहीं लगता तो मेरे करीमने इर्माया
 "أَلَا يَذُكُرُ اللَّهُ تَظَبُّرُ الْقُلُوبِ" अल्लाह के जिहमें हिलका इत्मिनान मौजूद है." (सूरअ २अह, १३/२८)

★ हमारा 'सुब्हानल्लाह' पण्डना अल्लाह
 भडोत पसंद है ! ★

अय रसूले आ'उम ﷺ के प्यारे दीवानो ! आयत का दुसरा टुकणा है
 "وَسُبُّهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا" (सूरअ अहज्ज, ३३/४२) तस्बीह अल्लाह को भडोत पसंद है. तस्बीह के हाने मत समजयेगा ! तस्बीहसे मुराह سُبْحَانَ اللَّهِ "सुब्हानल्लाह" पण्डना भडोत पसंद है, इतना पसंद के आप अंदाजा लगाईये, नमाज में भणे डो तो तअव्वुज और तस्मिया भाह में पण्डना, पडले घना पण्डो और घना की इभतेह سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ (सुब्हनकल्लाहुम्म) इकूअमें जाओ तो سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ (सुब्हान रब्बियल अज़ीम) सजदेमें जाओ سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى (सुब्हान रब्बियल आ'ला) क्यूं ? और यड तस्बीह अल्लाहको इतनी पसंद क्यूं है ? इस लीये के आप अपने अक़ीदे का इजहार कर रहे डो के डर ऐभ से, डर नकस से, डर कमजोरीसे अगर कोई पाक है तो मेरा मौला पाक है. अल्लाहको ये तारीफ़ इतनी पसंद आती है, इतनी पसंद आती है के मौला इस तारीफ़की भरकत से मुसीबतों से नजात अता इर्माता है.

★ अल्लाह से ज़बान क्यूं मांगनी चाहिये ? ★

में इस पर से दो तीन आयते आपके सामने पेश कर हूं ता के आप समज सकें. अल्लाह की भारगाहमें कोई बरयेकी ज़बान नहीं है तो मांगते है, अय अल्लाह ! ज़बान अता इर्मा दे, भोलने की कुव्वत अता इर्मा दे. लेकिन क्यूं मांगते हैं ? डमारे मांगने का रीज़न ये डोता है ?

ईस लिये ता के मा झीज़् जभीर (अपने हिलकी भात, अपने भयालात) किसी के सामने पेश कर सके, कोई भात करनी छो तो कर सके. और मान जाईअे ! मैंे ज्ब उजरत मूस़ा عليه الصلوة والسلام की हुआ कुर्आनमेंे पण्डता छूं तो मेरी अकुल हंग रछ जाती छे. हुआ करते छैंे,

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۖ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۖ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِي ۖ يَفْقَهُوا
قَوْلِي ۖ وَاجْعَلْ لِّي وَزِيرًا مِّنْ أَهْلِي ۖ هُوَ ذُو أُنْحَى ۖ اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ۖ وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ۖ
كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ۖ

"अय मेरे रभ ! मेरे लिये मेरा सीना भोल दे, और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज्बान की गिरछ भोल दे, के वो मेरी भात समजें. और मेरे लिये मेरे घरवालोंमेंे से अेक वजीर कर दे, वो कौन ? मेरा भाई छान ! ईससे मेरी कमर मज्भूत कर और उसे मेरे काममेंे शरीक कर, के छम बकषरत तेरी पाकी भोले." (सूरअे ताछा, २०/२५ से ३३) ज्बान की गिरछ को भोलनेकी हुआ, अल्लाहकी बारगाहमेंे सिई ईस लिये कर रछे छैंे ता के मौला मैंे तेरी तस्बीह कर सकुं और तेरा जिक कषरतसे कर सकुं. ज्बान मांगो तो अल्लाह का जिक करनेवाली ज्बान, अल्लाह की तस्बीह करनेवाली ज्बान मांगो.

★ ज्बान भुशनसीज भंदा कौन ? ★

और याद रभमेंे, जिसे अल्लाह तीन नेअमते अता इर्मा दे वो ज्बान भुशनसीज है. आड़ा अे करीम عَلَيْهِ السَّلَام इर्माते छैंे : لِسَانٌ ذَاكِرٌ : ऐसी ज्बान अल्लाहने अता इर्मा दी जे अल्लाह का जिक करती है, ऐसी ज्बानवाला भंदा अल्लाहको भडोत पसंद छे. और قَلْبٌ شَاكِرٌ और ऐसा भंदा जिस का हिल अल्लाहका शुक्र अदा करता छो उस शप्स को وَزَوْجَةٌ صَالِحَةٌ تُعِينُكَ عَلَىٰ أَمْرِ دِينِكَ وَدِينِكَ خَيْرٌ مَّا اكْتَنَزَ النَّاسُ अल्लाह तआला ऐसी मोमिना सालेहा जीवी अता इर्मा दे जे नेकीमेंे उसकी मदद करती छो. अल्लाह जिसको ये तीन नेअमते अता इर्मा दे

★ हज़ार परेशानियोंमें भी जिद्दुल्लाह से गाड़िल न बनो ! ★

अय रसूले आ'उम ﷺ के दीवानो ! मैं मानता हूँ के इस वक़्त आलमी सतह पर हम बेसरोसामानी के शिकार हूँ. लेकिन ऐसी सिच्युअेशन के अंदर भी कुर्आन हमें गाईड कर रहा है के देखो ! इन चीज़ों को तुम तलाश करो और फिर उसको झेलो करो, तुम्हारे प्रोब्लेम के सोल्युशन अल्लाह ﷻ ने अपनी किताबमें रब्बा है. गम उज़ार हों, परेशानियां उज़ार हों, मुसीबतों के बादल उज़ार मंडला रहे हों, तो मेहनत भी करो, तिज़ारत के लीये भी निकलो, मुक़ाबले के लीये भी ईल्मी मुक़ाबले लीये भी निकलो, लेकिन अल्लाह के ज़िक्र से गड़लत मत भरतना. अपनी कोशिशों पर भरोसा नहीं, अल्लाह के करम पर भरोसा करते हूँ अल्लाहका ज़िक्र करते हूँ जाओ. उसके ज़िक्र की बरकत से अल्लाह कामयाबी अता इर्मा देगा.

★ अल्लाह का ज़िक्र किसे, किसे कहते हैं ?! ★

मेरे प्यारे आका ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम सबकी जिम्मेदारी है के हम अल्लाहके ज़िक्र के आदी बन जायें. अब ज़िक्र का अेक मअनी यह भी है, ज़िक्र का मअनी होता है, अेक तो ज़बान से अल्लाह अल्लाह करना या الله أكبر (अल्लाहु अकबर) पण्डना यह भी, और ज़िक्र के मअनी होता है याद करना, तवज्जोह याहुंगा ! ज़िक्र का अेक मअनी होता है याद करना, हर वक़्त अल्लाह को याद करो हर वक़्त. तिज़ारत कर रहे हो ना ! तो उस वक़्त उलाल और हराम का मसअला आये तो अल्लाह के ज़िक्र से मुराद यहाँ यह भी है के तुम उस वक़्त अल्लाह को याद कर लो, यह जो मैं कर रहा हूँ सहीह है ? यअनी यह याद करके सहीह पर अमल करना इसको भी अल्लाह अपने ज़िक्रमें शामिल इर्मा देगा. निगाह उठना याउती है गैरकी तरफ़, अल्लाह को याद कर लो के मेरा मौला देभ रहा है ! गरदन जुका ली तो अल्लाहके ज़िक्र का पवाब अल्लाह अता इर्मा देगा. इस तरीक़े से आप बडोत सारी चीज़ोंसे बय

सकते हैं. हम सबके हिल पर जंग लग चुका है और इस हिलके जंगका इलाज उसका जिक्र है, कुर्आने मुक़दसकी तिलावत है.

और मेरे प्यारे आज़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस वक़्त हमारा युथ, भड़ोत सारे नवजवान इस वक़्त स्ट्रेस के अंदर डूबे डूबे हैं, उन्हें कोई यीज़ नज़र नहीं आ रही है, मैं भास तौर पर प्रोब्लेम्स के अंदर गिरफ़्तार युथ को कहुंगा के अपने दोस्तों से प्रोब्लेमका सोल्युशन मत तलाश करो, अपने दोस्तों के बजाये उलमा और मशाएफ़ के पास जाओ और उनके पास जाकर अपना प्रोब्लेम पेश करो ता के वो तुम्हें कुर्आन और उदीष की रोशनीमें प्रोब्लेम का सोल्युशन बतायेंगे.

★ **रसूलुल्लाह ﷺ की प्यरवी किस के लिये डिफ़िकल्ट है ?** ★

अेक आभरी बात और अर्ज़ करता हूँ. नवजवानो में अेक ट्रेन्ड यल पणा है, शोष है, अरखी बात है, लेकिन बणी अज्जब पोज़िशन डो रही है. उल्मा की लिभी डूई सीरत की किताबों नहीं पण्डते, कोई नोनमुस्लिम स्कोलरने लिभी उसको पण्डते हैं ! तो मैं आप से गुज़ारिश करता हूँ. सीरत की उन किताबों को पण्डो जो उल्मा अे अेडले सुन्नतने लिभी है, ता के सडीड नोलेज आप तक पहुंच सके. सडीड सरकार ﷺ की जिंदगी आप तक पहुंच सके. और ये बात याद रખें ! आज क्या वजह है के हमे रसूले आ'ज़म ﷺ के तरीके पर चलने पर दुश्वारी पेश डो रही है ? हम सरकार ﷺ को नमूना नहीं बनाते ! आशिके रसूल कडना भड़ोत आसान है लेकिन पैरवी अे रसूल ﷺ भड़ोत डिफ़िकल्ट है ! और क्यूं डीफ़ील्ट है ? किस के लिये डिफ़िकल्ट है ? उसे भी कुर्आनने मेन्शन किया,

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ

كَثِيرًا ۝

"बेशक ! तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहततर है उसके लिये के

अल्लाह और पिछले दिन की उम्मीद रખता हो और अल्लाह को बडोत याद करे." (सूरअे अडजाब, 33/29) जो अल्लाहका जिक कषरत से करता है उसके लिये हुजूर ﷺ की जिंदगी पर अमल करना हुशवार नहीं होता. हुजूरको आईडियल वही बनाता है, जो अल्लाहका जिक कषरत से किया करता है. यह जिकसे गइलत का नतीजा है.

मेरे प्यारे आका ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लहुमुलिल्लाह ! हम कोशिश करते हैं के तहरीकके माहोल से जो बंदा वाबस्ता हो, उसकी जिंदगीमें येन्जिस पैदा हो, ईन्क़िलाब पैदा हो. अल्लहुमुलिल्लाह ! हम तो सालमें अक मरतबा डाजिर हो जाते हैं, सारी मेहनतें हमारे साथियोंकी और उलमाकी, इन सबकी काविशें है और इन सब काविशोंसे ये कारवां चल रहा है. और भास तौर पर यह हुजूर मुक्किरे ईस्लाम की हुआओंका नतीजा है के जिसकी वजहसे अल्लहुमुलिल्लाह ! डौसला भी मिलता है, छिम्मत भी मिलती है और हुआओं भी मिलती है. और अल्लहुमुलिल्लाह हम काम कर रहे हैं. अल्लाह रब्बुल ईज़्जत ﷻ हम सबसे वो काम ले जिससे अल्लाह भी राजी हो जाये और उसके रसूल ﷺ भी राजी हो जायें.

★ कुर्आनसे मैंने नअत गोई सीपी : आ'ला उजरत ★

यूं के आ'ला उजरत अजीमुल बरकत से भी ईजतेमा को मन्सूख किया गया है, तो आ'ला उजरत अजीमुल बरकत भी शेअरो शाईरी के सिलसिलमें भी रहनुमाई किस से डासिल करते हैं ? किसी शाईर के पास जाकर के ? नहीं ! कहते हैं. "कुर्आन से मैंने नअतगोई सीपी." नअतगोई जैसा इन वो कुर्आन से सीप रहे हैं. अय आ'ला उजरत के माननेवालो ! तुम भी कुर्आन से अपने रिश्ते को मजबूत कर लो और साडिबे कुर्आन से अपने रिश्तेको मजबूत कर लो. तुम्हारी हुन्या भी संवर जायेगी और आभिरत भी संवर जायेगी. यह परयीस साला ईजतेमा आज यकीनन ! यहां पर ईनुशा अल्लाह ! मुकम्मल होगी,

લોકિન આપમેં સે બહોત સારે એસે હૈં જિન્કા દાવતી સફર આજ સે શુરૂ હો સકતા હે. જોઈન્ટ કરે સુન્ની દા'વતે ઈસ્લામી કો ઓર સાથ હી સાથ મિલકર કામ કરને કે લિયે તૈયાર હો જાઓ. યાદ રાખ્ખેં ! બહોત સારે મુસલમાન આજ પરેશાનિયોં કે શિકાર હૈં ઓર નવજવાન આવારગી કે રાસ્તે પર જા રહે હૈં તો હમ સબકી રીસ્પોન્સિબિલિટી હે ઉન્હૈં મદીને કે રાસ્તેકા મુસાફિર બનાનેકી. સબ મેહનત કરેંગે તો અલ્લાહ ઝરૂર કરમકી નઝર ફર્માએગા.

કામ વો લે લીજીયે તુમકો જો રાઝી કરે
ઠીક હો નામે 'રઝા' તુમ પે કરોળોં દુરૂદ

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلِغُ الْمُبِينُ





જા અલ્ હક્ક

લેખક : હકીમુલ ઉમ્મત હઝરત મુફ્તી અહમદચારખાં નર્ધમી અશરફી
અનુવાદક : પટેલ શબ્દીર અલી રઝવી

(પેજસ : ૯૩૬)

(સંપૂર્ણ કિતાબ)

હદિયો : રૂ. ૪૦૦/-

(ટપાલ ખર્ચ રૂ. ૫૦/-)

અહલે સુન્નત વ જમાઅતના અફીદાઓનું સમર્થન કરતી, વહાબી, અહલે હદીષ, દેવબંદીઓની બદઅફીદગીની રદ કરતી કુર્આન, હદીષ, અકવાલ થકી મજહબે હક્કને રોશન કરતી કિતાબ....

આ કિતાબ દરેક તે સુન્નીના ઘરમાં હોવી જોઈએ જેને પોતાના તથા ઘરવાળાંના ઈમાનની ચિંતા છે. આ કિતાબમાં તફ્લીદ, ઈલ્મે ગયબ, હાઝિરો નાઝિર, હુઝૂર ﷺ ને બશર તથા ભાઈ કહેવા વિશે, અવલિયાથી મદદ માગવી, બિદઅત વિશે, કાનો સુધી હાથ ઉઠાવવા, ઢૂંટી નીચે બાંધવા, રફએ યદેન, ત્રણ તલાક, મીલાદ શરીફ, ફાતેહા-ત્રીજીયા, મઝારો પર ગુંબદ, કબરોની ઝિયારત...વગેરે અનેક મસાઈલની ચર્ચા છે. જેમાં કુર્આન, હદીષ, અકવાલથી બદઅફીદાઓના શૈતાની વસવસાઓના ઈમાન અફરોઝ જવાબો છે.

સંપર્ક : રઝવી કિતાબ ઘર, મુ.પો. દયાદરા, ઠેક ઓફ ડા. જિ. ભરૂચ-૩૯૨૦૨૦ (ગુજરાત) ભરોડા

A/c.No.34620100000303, Razvi Kitab Ghar IFSC Code: BARBODAYADR Mo.9427464411

Phonepay/G.Pay/Paytm /Mo. 94274 64411



अय शङ्गीओ उमम् तुम पे बेडद सलाम

अय शङ्गीओ उमम् तुम पे बेडद सलाम
अय जमीलुशिशयम् तुम पे बेडद सलाम
जब मदीने के माहे तमाम आ गये
डो गया का'बा भम तुम पे बेडद सलाम
इके उम्मत में लभ पर हुआओं रडी
आंभ रडती थी नम, तुम पे बेडद सलाम
इर मदीने में उमको भुला लिजये,
अय मेरे मोडतरम ! तुम पे बेडद सलाम
लभपे जरी डो कलमा जभां पर हुइद
जब ली निकले यड दम, तुम पे बेडद सलाम
गौषो फ्वाज रजा के तुईल अय करीम
रभना मेरा भरम, तुम पे बेडद सलाम
याडता है रजा 'शाकिरे' गमजदा
कड दो राजी हैं उम, तुम पे बेडद सलाम

